नूपुर

2022

नूपुर - 2022

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के
129वें जन्मोत्सव पर
स्मारिका-रूप में कतिपय 'नूपुर'

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
(श्री म ट्रस्ट)

कार्यालय : 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ 160 018
फोन 0172-2724460
मो० 8427999572

मन्दिर : श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत पीठ (श्री पीठ)
सैक्टर 19-डी, चण्डीगढ़ 160019

website : http://www.kathamrita.org
email : srimatrust@yahoo.com

आवरण चित्र

श्रीरामकृष्ण : ...उस देश (गाँव) में बढ़इयों की स्त्रियाँ चिड़वा बेचती हैं। वे कितनी ओर सम्भालकर काम करती हैं, सुनो। ढेंकी का पाट पड़ता है, हाथ से धानों को ठेलती जाती हैं, और एक हाथ से लड़के को गोद में लेकर स्तन पिलाती हैं। और फिर खरीदार आया है, ढेंकी इधर पड़ रही है और खरीदार के साथ बातें भी चलती हैं। ...किन्तु उसका पँद्रह आना मन ढेंकी के पाट की ओर रहता है, कहीं हाथ पर न पड़ जाए! और एक आने से लड़के को स्तनपान करवाना और खरीदार के संग बातें करना। वैसे ही जो गृहस्थ (संसार) में हैं, उन्हें पन्द्रह आने मन भगवान में देना उचित है। बिना दिए सर्वनाश— काल के हाथ में पडना होगा। और एक आने से अन्य-अन्य कर्म करो।

— श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत 3-7-1
27 दिसम्बर, 1883

© श्री म ट्रस्ट
गंगा दशहरा, 9 जून, 2022

सम्पादन	:	डॉ० (श्रीमती) निर्मल मित्तल
सहायता	:	डॉ० नौबतराम भारद्वाज सन्दीप नाँगिया नितिन नन्दा
प्रकाशन	:	अध्यक्ष श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट) 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़-160 018 फोन - 0172-2724460, मो० 8427999572
मुद्रण	:	प्रिंट लैण्ड, कश्मीरी गेट, दिल्ली – 110006
आवरण	:	junpiiiiiiiiii/shutterstock.com Stock Photo ID: 609519635

समर्पण

कथामृतकार श्री 'म' की सेवक-सन्तान
स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज को
जो
श्री म दर्शन-ग्रन्थमाला के माध्यम से
श्रीरामकृष्ण-कथा को,
कथामृत में कही-अनकही ठाकुर-वाणी को
हम तक लाए।

'नूपुर' नाम क्यों?

ठाकुर दक्षिणेश्वर में नरेन्द्र, भवनाथ आदि भक्तों के संग में हैं।

ठाकुर गाना गा रहे हैं—

बोल रे श्रीदुर्गा नाम।
(ओ रे आमार आमार आमार मन रे)।
...
यदि बोलो छाड़ो-छाड़ो मा, आमि ना छाड़िबो।
बाजन नूपुर होये मा तोर चरणे बाजिबो॥[1]

माता जी (श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता) कहा करतीं कि ठाकुर-वाणी का अक्षर-अक्षर है 'नूपुर'। इन 'नूपुरों' की झंकार से सब पाठक ठाकुर का शुद्ध प्यार पाएँ, इस अभिलाषा से ही उन्होंने अपने गुरु महाराज के 101वें जन्म-दिन पर सन् 1994 में स्मारिका-रूप में वार्षिक पत्रिका का प्रारम्भ 'नूपुर' नाम से किया था। उनका विश्वास था कि ठाकुर-वाणी के पठन-श्रवण-मनन और पालन से व्यक्ति स्वयं बन जाता है माँ के चरणों का 'नूपुर'।

---

[1] [ओ मेरे मन, तू दुर्गा-दुर्गा नाम बोल।... यदि कहो छोड़, छोड़, किन्तु मैं नहीं छोड़ूँगा।
हे माँ, मैं तेरे चरणों का नूपुर बनकर बजूँगा।]

— कथामृत भाग II, सप्तदश खण्ड, द्वितीय परिच्छेद, 19-09-1884

विषय-सूची

	निवेदन	...	7
1.	रामकृष्ण-भावगङ्गा के दो किनारे	...	11
2.	सिख गुरु और श्रीरामकृष्ण	...	25
3.	मास्टर महाशय के सदुपदेश	...	33
4.	परमहंस योगानन्द जी की दृष्टि में मास्टर महाशय	...	43
5.	अपनी भाषा का महत्त्व— श्री म	...	51
6.	Letters of Swami Nityatmananda	...	55
7.	ईश्वरदेवी गुप्ता द्वारा स्वामी नित्यात्मानन्द जी को लिखे कुछेक पत्र	...	61
8.	अंजलि	...	69
9.	About Swami Vivekananda	...	83
10.	शत शत नमन माँ सारदा	...	91
11.	Activities of Sri Ma Trust	...	93

•

श्री 'म' ट्रस्ट

श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के प्रणेता श्री महेन्द्रनाथ गुप्त, बाद में मास्टर महाशय वा श्री 'म' (M.) के नाम से विख्यात हुए।

इन्हीं श्री म के अन्तरंग शिष्य थे स्वामी नित्यात्मानन्द जो 'श्री म दर्शन' ग्रन्थमाला के प्रणेता हैं। और वे ही हैं श्रीरामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट) के संस्थापक।

अपने जीवन में ठाकुर-वाणी का पालन व प्रचार-प्रसार करने वाले श्री 'म' के पास दीर्घकाल तक रहकर स्वामी नित्यात्मानन्द जी को विश्वास हो गया था कि जगत् के सकल काम-काज करते हुए भी मन से ईश्वर के साथ रहा जा सकता है और यही है शाश्वत शान्ति तथा परमानन्द का सहज, सरल उपाय। परमानन्द की प्राप्ति ही है मनुष्य-जीवन का एकमात्र उद्देश्य। इसी परमानन्द की प्राप्ति जन-जन को हो, इस उद्देश्य से स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज ने अपने प्रथम गुरु श्री 'म' की स्मृति में 12 दिसम्बर सन् 1967 को श्री 'म' ट्रस्ट (श्रीरामकृष्ण श्री 'म' प्रकाशन ट्रस्ट) को रोहतक में रजिस्टर करा दिया था जो बाद में चण्डीगढ़ ले आया गया। तब से लेकर आज तक ठाकुर-कृपा से ठाकुर-वाणी के प्रचार-प्रसार का कार्य निरन्तर चल रहा है और आगे बढ़ रहा है।

श्री 'म' ट्रस्ट से जुड़े ठाकुर-भक्तों/सेवकों पर ठाकुर इसी तरह अपना शुद्ध प्यार बनाए रखें, यही उनके श्री चरणों में प्रार्थना है।

— अध्यक्ष, श्री 'म' ट्रस्ट

निवेदन

श्री म ट्रस्ट की द्वितीय प्रधान श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता अपने गीत 'श्री म दर्शन— सच्ची माँ' में लिखती हैं :

"यों तो शास्त्र पढ़े पढ़ावें, उनमें बालू-चीनी पावें
इसमें बालू का नाम नहीं है, अमर मिश्री का ढेर यहीं है।"

शास्त्रों में अनेक ऐसी बातें होती हैं जिन्हें पाठक निज बुद्धि से या तो प्रायः समझ नहीं पाता या उन्हें गलत समझ लेता है। इसीलिए ठाकुर श्रीरामकृष्ण कहते हैं, शास्त्र गुरु-मुख से ही सुनना चाहिए।

परन्तु श्री म दर्शन श्री म के अन्तरंग शिष्य स्वामी नित्यात्मानन्द द्वारा 16 भागों में रचित ऐसा शास्त्र है जिसकी व्याख्या ठाकुर जी के व्यास, कथामृतकार मास्टर महाशय अथवा श्री म ने स्वयं की है निज मुख से आगन्तुक भक्तों के समक्ष उनके साथ हुए वार्तालाप के दौरान। इसमें उपनिषद्, गीता, पुराण, बाइबल, गुरुग्रन्थ साहब आदि आध्यात्मिक शास्त्रों की व्याख्या है ठाकुर श्रीरामकृष्ण, जीवनालोक में। इसके अतिरिक्त इसमें अनेक नवीन, अत्याधुनिक विषयों पर भी चर्चा है। अथ च यह अद्‌भुत ग्रन्थ है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आबालवृद्ध सभी जनों के लिए लाभप्रद व प्रेरणादायी है। मनुष्य के मन में उठ सकने वाली समस्त जिज्ञासाओं का समाधान इसमें उपलब्ध है।

तभी तो स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने अपने अध्यक्ष-काल में ही सन्ध्याकालीन आरती में कथामृत के साथ-साथ श्री म दर्शन का भी नित्य पाठ आरम्भ करवा दिया था। माता जी श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता ने अपने गुरु की इस इच्छा का सदा पालन किया और माता जी के बाद भी आज तक ऐसा ही चल रहा है।

हर्ष का विषय है कि आज विश्व भर में श्री म दर्शन-ग्रन्थ की माँग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। पाठकों के सर्वतोमुखी कल्याण की भावना से इस बार के नूपुर में भी श्री म दर्शन-ग्रन्थ में से प्रचुर सामग्री दी जा रही है। आशा है पाठकगण इससे लाभान्वित होंगे व प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

खेद की बात है कि श्री म ट्रस्ट की भक्त एवं सेविका श्रीमती संगीता कपूर का पहली मई, 2022 को एवं डॉ. विमला सूद का पहली अगस्त, 2021 को निधन हो गया। माता जी श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता का शरीर रहते उनकी व्यक्तिगत सेवा के अतिरिक्त ट्रस्ट की अनेक गतिविधियों में इन दोनों का योगदान स्मरणीय रहा है।

श्री म के प्रपौत्र प्रोफेसर दीपक गुप्ता भी हमारे बीच नहीं रहे। 30 जनवरी, 2022 को उनका शरीर चला गया। उनके मन में श्री म ट्रस्ट के लिए विशेष श्रद्धा-भाव था। ट्रस्ट के लिए अनुदान तो वे भेजते ही। हमारे अनुरोध से उन्होंने स्नेहवश 31 जुलाई, 2021 को zoom के माध्यम से श्री म का जीवन व सन्देश विषय को लेकर बंगला में एक वार्त्ता भी दी। ट्रस्ट-परिवार उनके प्रति सदा कृतज्ञ रहेगा।

नूपुर-2022 में योगदान के लिए श्री नौबत जी का विशेष धन्यवाद। इसमें अधिकतर लेख उन्हीं के हैं। श्री सन्दीप नाँगिया व श्री नितिन नन्दा का भी धन्यवाद जिन्होंने समय-समय पर इसके प्रकाशन कार्य में पूरी सहायता की है, आवरण-चित्र तैयार करने तक।

श्रीरामकृष्णार्पणमस्तु!!

- डॉ० (श्रीमती) निर्मल मित्तल

ठाकुर श्रीरामकृष्ण

श्री म

स्वामी नित्यात्मानन्द

श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता अपने पास आने वाले भक्तों से कहा करतीं—

देखो! ठाकुर तुम्हारे कितने समीप हैं! तुम आपस में एक-दूसरे का हाथ पकड़ो, फिर अन्तिम जन का हाथ पकड़ते हुए कहतीं— देखो, तुम सब का हाथ है मेरे हाथ में, मेरा हाथ है स्वामी नित्यात्मानन्द के हाथ में, उनका हाथ है श्री म के हाथ में और श्री म ने पकड़ा है ठाकुर को; तो तुम सब हो ना ठाकुर के पास! कहाँ दूर हैं ठाकुर तुमसे? तुम सब हो ठाकुर के अपने बालक! उनके निजी जन! एक हाथ से ठाकुर को पकड़े रखो कस कर! फिर तुम संसार में गिरोगे नहीं।

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता की यह आश्वस्त वाणी उनके साथ जुड़े ठाकुर-भक्तों का आज भी मंगल कर रही है। उन्हीं की प्रेरणा से उनके साथ जुड़े ठाकुर-भक्त श्री म ट्रस्ट के माध्यम से आज भी ठाकुर-सेवा में लगे हैं।

•

श्रीरामकृष्ण परमहंस

(1836-1886)

- जन्म : 18 फरवरी, सन् 1836 ईसवी।
- स्थान : कामारपुकुर (हुगली जिले का अन्तर्वर्ती ग्राम)
- माता-पिता : श्रीमती चन्द्रमणि देवी और श्री क्षुदिराम चट्टोपाध्याय (चटर्जी)।
- भाई-बहन : दो बड़े भाई, दो बहनें।
- शिक्षा : कुछ दिन पाठशाला में गए। प्रारम्भ से ही अर्थकरी विद्या से विकर्षण। स्कूल से भागे रहते। लेख सुन्दर। अद्भुत स्मरण-शक्ति।
- विवाह : 22-23 वर्ष की आयु में सन् 1859 में 6-7 वर्षीय सारदा मणि के साथ।
- दक्षिणेश्वर-वास : बड़े भाई रामकुमार की मृत्यु के बाद दक्षिणेश्वर में पुजारी। बाद में पूजा-कर्म से निवृत्त होकर वहीं दक्षिणेश्वर में स्वतन्त्र वास— प्रायः अन्त समय तक।
- महासमाधि : 16 अगस्त, 1886 ईसवी।

●

रामकृष्ण-भावगङ्गा के दो किनारे

[आजकल स्तम्भों पर निर्मित विशालकाय गगनचुम्बी भवन निर्माण-कला अपने चरमोत्कर्ष पर है। जाहिर है, जितने सुदृढ़ आधारभूत स्तम्भ होंगे, उनकी स्थापत्य कला भी उतनी ही दीर्घायु होगी। इसी सिद्धान्त से दूरगामी रामकृष्ण भावगङ्गा की अजस्र गति उसके दोनों किनारों की मजबूती पर ही तो निर्भर करेगी। आइए, इस परिप्रेक्ष्य में कुछेक सारभूत तथ्यों का अवलोकन एवं उनकी भावधाराओं में अवगाहन करें।]

वर्ष 1964 माँ ईश्वरदेवी की आध्यात्मिक साधना-यात्रा का चरम वर्ष था। इस वर्ष की उनकी स्वयं की हस्तलिखित डायरी पढ़कर ज्ञात हुआ कि ब्रह्मज्ञान होने पर साधक की जो जड़वत्, पिशाचवत्, बालवत्, उन्मादवत् आदि अवस्थाएँ होती हैं उनमें से उन्मना समाधि के अन्तर्गत आने वाली उन्मादावस्था माँ ईश्वरदेवी के दैनिक जीवन में यदा-कदा दृष्टिगोचर हुई है। उनका रोहतक-स्थित विशाल सरकारी निवास किसी नैमिषारण्य से कम नहीं था। आध्यात्मिकता की उस चरमोत्कर्ष-अवस्था में वे उन्मादिनी होकर उच्च स्वर से गाया करती थीं —

'नरेन्द्र महेन्द्र बने दो खम्भे, माँ-ठाकुर के मन्दिर में....'

इसी भावधारा से ओतप्रोत होकर उन्होंने उस वर्ष 'नुपूर तेरे चरणों का', 'श्री म हमें बना दे राम', 'अवतार हुए श्रीरामकृष्ण वसुधैव कुटुम्ब बनावन को', 'श्री म दर्शन— सच्ची माँ' आदि अनेक गीतों की रचना की और अनुभव किया कि भगवान श्रीरामकृष्ण भावगङ्गा के नरेन्द्र और महेन्द्र दो अतीव सुदृढ़ तटीय किनारे हैं जिनके संरक्षण में सद्य युगावतार गुरु महाराज का अमर सन्देश युगों-युगों तक प्रवाहित होता रहेगा।

यहाँ जगबन्धु महाराज का मास्टर महाशय से प्रथम साक्षात्कार का उल्लेख करना अप्रासङ्गिक नहीं होगा। बात उन दिनों की है जब जगबन्धु महाराज जगबन्धु रॉय नाम से कॉलेज में विद्यार्थी थे। समग्र भारतवर्ष में स्वदेशी आन्दोलन की लहर थी। नरेन्द्र तब शिकागो धर्म सम्मेलन में दिए अपने सम्भाषण से जगद्विख्यात हो चुके थे और बंगाली युवा वर्ग में उनकी शिकागो वक्तृता की छवि ने उनके लिए एक श्रद्धेय स्थान बना लिया था। नवयुवकों में उनके प्रति एक उन्मादी लहर उमड़ पड़ी थी। जगबन्धु भी उनके अनन्य श्रद्धालु होने के कारण उपास्य के रूप में यथा अवसर उनका गुणगान करते थे। 'उस समय से ही हम स्वामीजी को आश्रय करके यथाशक्ति पवित्र जीवन-यापन और सेवाव्रत के अनुष्ठान करने की चेष्टा किया करते थे।'[1]

उन्हीं दिनों बेलुड़मठ में श्री श्रीमाँ सारदा से दीक्षित एक मित्र से जगबन्धु रॉय की प्रसङ्गत: धर्म-चर्चा हो गई और उस बन्धु ने मास्टर महाशय के विषय में यह कह दिया कि वे श्री श्रीठाकुर की बातों के अतिरिक्त अन्य कुछ बोलते ही नहीं हैं। जगबन्धु को अपने मित्र की यह बात इतनी नागवारा गुज़री कि वे तुरन्त बोल उठे, 'वे स्वामीजी की बातें क्यों नहीं बोलते? स्वामीजी ने भारत को बचा दिया है। मुक्ति का सन्धान दिया है। उनके आगमन और प्रचार से ही तो स्वाधीनता संग्राम का नूतन रूप से सूत्रपात हुआ है। हम तो उनकी बातों से ही पवित्र जीवन यापन करने की चेष्टा कर रहे हैं। उनकी बातें क्यों नहीं बोलते?'[1]

यह चर्चा उग्र से उग्रतर होती चली गई। अन्ततोगत्वा पक्ष-प्रतिपक्ष के वाद-प्रतिवाद से चर्चा को प्रचण्ड होती देखकर मित्र महाशय ने झल्लाकर जगबन्धु रॉय से यह कहकर उठते हुए मुक्त होना चाहा— "तो फिर आप एक दिन स्वयं जाकर उन्हें अपनी राय बता आइए ना!"

बस फिर क्या था! धुन के पक्के जगबन्धु रॉय जा पहुँचे मॉर्टन स्कूल, मास्टर महाशय को सीख देने। प्रारम्भिक परिचय आदि के बाद प्रशान्त चित्त मास्टर महाशय ने अपने शालिग्राम रूपी अन्तर्भेदी दोनों चक्षुओं से

---

[1] श्री म दर्शन, प्रथम भाग, भूमिका

कुछ पलों के लिए जगबन्धु राय को अपलक नयनों से निहारा और फिर अगले प्राय: तीन घण्टे तक वे स्वामी विवेकानन्द जी के विषय में लगातार निम्न रूपे बोलते रहे—

श्रीरामकृष्णदेव की 'माथार मणि' नरेन्द्र

'भारत के युवक यदि स्वामीजी को पकड़कर चलें तो उनका अपना भी कल्याण है और देश के और भी दसों का है कल्याण। शुकदेव नवकलेवर में नरेन्द्रनाथ के रूप में आए। उनका अपना कुछ भी प्रयोजन नहीं, वे थे नित्यसिद्ध, ईश्वरकोटि सप्तर्षियों में से एक ऋषि। भारत के और जगत् के कल्याण के लिए था उनका आगमन— चारतल से एकतल पर उतरे थे जीवशिव की सेवा सिखाने, श्रीरामकृष्णदेव की 'माथार मणि' नरेन्द्र। अठारह गुण थे उनके— केशव में था केवलमात्र एक। सीजर, सिकन्दर, नैपोलियन की विजयों से बड़ी थी उनकी विजय— धर्मक्षेत्र इत्यादि में।'[1]

श्रीरामकृष्ण-भावगङ्गा धारा के एक स्तम्भ मास्टर महाशय द्वारा अपर स्तम्भ स्वामी विवेकानन्द के विषय में ये उद्‌गार उस भावगङ्गा को आगे निरन्तरता के साथ प्रवाहित होते रहने के प्रबल एवं सुदृढ़ द्योतक थे। डॉ० अभय चन्द्र भट्टाचार्य अपने मूल बंगला ग्रन्थ में कुछ ऐसे ही उद्‌गार व्यक्त करते हैं—

'सारी धरती के सामने अपना एक सामग्रिक अथवा सार्वभौम रूप उपस्थापित करने के लिए भगवान् रामकृष्ण ने जिसे स्वयं चिह्नित किया था, उस प्रबल शक्तिशाली पुरुष का नाम आज स्मरण करवाने की अपेक्षा नहीं है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में आध्यात्मिक जगत् में जो एक प्रबल विस्फोट हुआ था— उसका परिणाम आज हम सभी सर्वत्र देख रहे हैं। श्रीरामकृष्ण की समन्वयात्मक अनुभूति स्वामी विवेकानन्द के

---

[1] श्री म दर्शन, प्रथम भाग, भूमिका

माध्यम से जो चहुँ ओर प्रसारित हुई, उसे आज समग्र विश्व स्वीकारने को बाध्य है।'[1]

'दूसरी ओर त्याग-संयम के आदर्श के रूप में गृहस्थाश्रम को पुनरुज्जीवित करने के लिए जिन्हें चिह्नित किया गया था, वे थे श्री म। बाह्य जगत् में विवेकानन्द ने जहाँ अपने विराट स्वरूप से समग्र संसार को कम्पायमान कर दिया था, वहीं श्री म के भीतर से श्रीरामकृष्ण त्याग के आदर्श से मनुष्य मात्र को अनुप्राणित करके समाज जीवन में एक नवीन क्रान्ति ले आए। सम्पूर्णभावे अहंशून्य होकर इसी पूतगन्धमय गृहस्थाश्रम में समस्त जीवन अतिवाहित किया; श्रीरामकृष्ण के उज्ज्वल त्याग का आदर्श अपने जीवन में पूरे-का-पूरा उतारकर कथामृत-रचना तथा वर्षण करने का जीवन-व्रत धारण किया।

'संसार से परम विरक्त इस विदेहपुरुष को शतचेष्टाएँ करने पर भी गुरुदेव से संन्यास मिला नहीं, क्योंकि उन्हें तो "भागवत-पण्डित" होकर उनकी "कथामृत" समग्र जगत् को सुनानी थी। माँ जगदम्बा का "इतना-सा" काज जो उन्हें करना था। इसीलिए तो ठाकुर उन्हें संग लाए थे। हम देखते हैं कि उसी 'इतने से' काज के लिए सुदीर्घ प्रायः अर्धशताब्दी पर्यन्त वे संसार के इस ज्वलन्त अग्निकुण्ड में जलभुन कर, दुःखताप में दग्ध हुए गृहस्थियों को (रामकृष्ण की) आशावाणी सुनाते रहे और साथ-साथ संस्कारवान् युवकों को त्यागवैराग्यमय संन्यास जीवन के लिए उद्‌बुद्ध करते रहे।

'भागवत-पण्डित' श्री म

'श्रीरामकृष्ण चाहे स्वयं कह गए हैं कि यहाँ का कोई भी जन संसारी नहीं है, फिर भी संसारियों को उठाने के लिए एकजन संसारी की ज़रूरत होती है, जो संसार में रहता हुआ भी संसारी नहीं होता। ऐसा न हो तो संसार-क्लिष्ट लोग साहस पाएँगे कैसे? जो संसार-त्यागी संन्यासी हैं, उनसे यह काम ठीक से शायद सम्भव नहीं होता, क्योंकि गृहस्थी और संन्यासी

---

[1] डॉ० अभय चन्द्र भट्टाचार्य द्वारा लिखित "श्री म का जीवन दर्शन" बंगला ग्रंथ का पृ० 6 द्रष्टव्य।

में एक प्रकार की दूरी रह ही जाती है। गृहस्थी साधुसंग करेंगे, साधु की घड़ी के संग अपनी घड़ी मिलाएँगे, लेकिन दोनों का जीवन है सम्पूर्ण पृथक्। तभी उनमें से एकजन होकर यदि कोई उन्हें ऊपर उठा सकता है, तो काम खूब आसानी से बन जाता है; जैसे कि संसारियों को ऊपर उठाने के लिए ही आजन्म ब्रह्मचारी नित्यानन्द को महाप्रभु ने संसारी बना दिया था। वैसे तो ठाकुर के सम्पर्क में आकर सभी गृही भक्त ही "पाँकाल माछ" हो गए थे और उन्होंने अपने-अपने सीमित क्षेत्र में परनालों से गिरने वाले जल के रूप में काम करते-करते विभिन्न वर्गों के न जाने कितने जनों को रामकृष्ण-भावधारा में सिञ्चित किया था; फिर भी श्रीरामकृष्ण देव गृहस्थियों का एक मॉडल तैयार कर गए थे— श्री म के रूप में।'[1]

रामकृष्ण आश्रम, त्रिचूर के तत्कालीन सचिव स्वामी सिद्धिनाथानन्द श्रीरामकृष्ण-लीलांगन के दो इन्द्र बताते हैं। एक तो हैं "दत्त" तथा दूसरे "गुप्त"। उन्हीं के शब्दों में—

'Sri Ramakrishna had two 'Indra' among his prominent disciples : Narendra and Mahendra; the former was a Dutta and the other a Gupta. Both the name and the title of both of them are significant, as they indicate the roles they subsequently played in the divine dramatic troupe of Ramakrishna. One was Dutta, an open gift to the world at large and the other Gupta, one hidden behind the screen : Narendra was the spokesman, and Mahendra the scribe of Ramakrishna.

'Swami Vivekananda said he was a voice without a form; M. was his Master's voice. Both were naturally gifted, but Ramakrishna shaped them both in his own image. Narendra was like unto Arjuna to Shri Krishna who fought for His cause. Mahendra was the

M. was the Vyasa of Shri Ramakrishna

[1] वही पृ० 13 द्रष्टव्य

Vyasa of Shri Ramakrishna who recorded the modern Bhaagavata. Mahendra was the born poet who was made a Rishi by his Master and thus he became a superb composer of the Gospel of Sri Ramakrishna.'[1]

अपनी लीला-विस्तार के इन दोनों इन्द्रों को श्री श्रीठाकुर पूर्व से ही नियोजित करके संग लाए। प्रथम पहुँचे नरेन्द्र और उसके कुछ दिन बाद ही पहुँचे महेन्द्र; और तदनन्तर दोनों की ही गढ़न अगले प्राय: पाँच वर्षों तक चली। श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के पाँचों भाग इसी गढ़न के परिचायक हैं। महेन्द्र को तो वे तैयार कर गए बड़े घर की दासीवत् जीवन यापन करने के लिए, बीच-बीच में निर्जनवास और नित्य साधुसङ्ग के लिए और नरेन्द्र को तैयार कर गए भगवान् श्रीरामकृष्ण की भावधारा को समग्र विश्व में प्रचारित-प्रसारित करने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए।

श्री श्रीठाकुर ने अंग्रेज़ी-नवीस नरेन्द्र-महेन्द्र को वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार अपने भावदर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए ही चयनित किया था। एक 'छोकरा' और दूसरा उससे 9-10 वर्ष बड़ा। श्री म का श्री श्रीठाकुर के पास आवागमन शुरु हुए कुछ दिन ही हुए हैं और मोर का एक निश्चित समय पर अफ़ीम की खुराक लेने का सिलसिला शुरु हो चुका है। गुरुदेव के चतुर्थ दर्शन के अवसर पर ही श्री श्रीठाकुर परमभक्त हनुमान का दृष्टान्त देकर श्री म की भविष्यचर्या निर्धारित कर देते हैं। वे श्री म से कहते हैं, 'तुम जाकर नरेन्द्र से बातचीत करो और फिर मुझे बताना कि वह कैसा लड़का है।'[2] बाद में नरेन्द्र और महेन्द्र दोनों के एक साथ उपस्थित होने पर श्री श्रीठाकुर कहते हैं, 'तुम दोनों अंग्रेज़ी में वार्त्तालाप करो, मैं सुनूँगा।' अंग्रेज़ी में तो बातचीत हुई नहीं, बंगला में उनकी बातचीत सुनते हुए ठाकुर का प्रेमानन्द आह्लाद, उत्साह चहुँ ओर छलकने लगा। इसके अतिरिक्त भी नाना प्रसङ्गों में हम देखते हैं कि श्री श्रीठाकुर नरेन्द्रनाथ और महेन्द्रनाथ को अन्य सभी की अपेक्षा कुछ

---

[1] Sri Sri Ramakrisha Kathamrita Centenary Memorial, P. 234

[2] श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत, प्रथम भाग, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 52

भिन्न रूप में एक विशिष्ट भाव से देखते हैं; क्योंकि दोनों का ही पथ भिन्न है, कार्यक्षेत्र भिन्न है और भाव भी भिन्न है। इसी को श्री श्रीठाकुर ने अन्यत्र भी 'सोऽहम् और दासभाव', तथा 'ज्ञान और भक्ति' आदि के प्रसङ्गों में इंगित किया है। वे कह रहे हैं—

'यह सुन्दर भाव है— तुम प्रभु, मैं दास। जब तक देह सत्य है, यह बोध है, मैं-तुम है, तब तक सेव्य-सेवक भाव ही अच्छा है; मैं वही हूँ, यह बुद्धि अच्छी नहीं। और क्या है, जानते हो? एक ओर से कमरे को देख लेना जैसा है, कमरे के मध्य से कमरे को देख लेना भी वैसा ही है।'[1] यहाँ जगबन्धु महाराज का निम्न मन्तव्य भी ध्यातव्य है :

गृहस्थाश्रम के 'मॉडल' श्री म

"श्रीरामकृष्ण द्वारा अभिषिक्त ब्रह्मज्ञान के एक विशिष्ट आचार्य हैं श्री म। बहुत भक्तों ने उनसे ब्रह्मज्ञान का उपदेश लेकर संन्यास धर्म ग्रहण किया था। और फिर वे श्रीरामकृष्ण के अभिलषित गृहस्थाश्रम के एक विशेष 'मॉडल' अथवा आदर्श हैं। गृहस्थाश्रमियों के लिए श्रीरामकृष्ण ने जो व्यवस्था दी थी, वह सम्पूर्ण रूप से श्री म के जीवन में परिस्फुट हुई थी।"[2]

श्रीरामकृष्ण में हैं सब भाव

15 मार्च, 1886 को श्री श्रीठाकुर रोगजन्य दुर्बलता के कारण बहुत आहिस्ते-आहिस्ते बातें कर पा रहे हैं। अधिकांशत: इशारों में ही कुछ कहते हैं। राखाल ठाकुर से कहते हैं— नरेन्द्र आपको खूब समझता है। श्री श्रीठाकुर ने पास बैठे श्री म से फिर पूछ ही लिया— क्यों जी? श्री म ने उत्तर में केवल "जी हाँ" ही कहा। श्री म की तरफ़ इशारा करने के बाद राखाल आदि उपस्थित पार्षदों की ओर भी इशारा किया। राखाल ठाकुर के इशारे को समझ गए और बोले, "आप कह रहे हैं कि नरेन्द्र का वीर भाव है और इन (मास्टर) का सखी भाव है?" श्री श्रीठाकुर ने ईषत् हास्य से इसका अनुमोदन किया है। बालक स्वभाव श्री श्रीठाकुर अचानक बोल उठे, 'अच्छा, मेरा क्या भाव है?' इसका उत्तर स्वयं नरेन्द्र देते हैं— 'वीर

---

[1] श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत, द्वितीय भाग, तृतीय संस्करण, पृ० 335-336

[2] श्री 'म' दर्शन अष्टम भाग, प्रथम संस्करण, पृ० ix द्रष्टव्य।

भाव, सखी भाव— सब भाव।'[1] इस परिदृश्य में श्री श्रीठाकुर स्वयं अपने भावी प्रचार-प्रसार की विधा निर्दिष्ट कर गए हैं। एक के द्वारा वे अपने सर्वात्मक सार्वभौम रूप का प्रकाश-प्रचार समग्र जगत् के समक्ष करवाएँगे तथा अन्य के द्वारा वे अपने आन्तरिक त्याग-वैराग्य-मण्डित भावधारा को प्रकाशित-प्रचारित करवाएँगे। इसीलिए हम देखते हैं कि महेन्द्रनाथ दत्त प्राय: अर्ध शताब्दी पर्यन्त इसी रूप में अवतार-लीला के Extension के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे। उन्हीं के शब्दों में—

"मैं तो एक तुच्छ जन हूँ। परन्तु समुद्र के पास रहता हूँ, और अपने पास समुद्र जल के कुछ घड़े रखता हूँ। जब भी कोई मेरे पास आते हैं, इसी से उनका सत्कार करता हूँ। गुरु-वचन सिवा और मेरे पास है भी क्या देने को?"

श्री श्रीठाकुर के अन्तरंग पार्षदों में से इन दो को ही अनेक सत्यान्वेषीजन श्रीरामकृष्ण भाव-दर्शन प्रचार-प्रसार के दो मूल स्तम्भ के रूप में स्वीकार करते हैं। स्वामी भजनानन्द जी के विचार इस सम्बन्ध में ध्यातव्य हैं। वे अपने लेख 'The Scriptures of the Future' (भविष्य का शास्त्र) में लिखते हैं—

'The personality of Sri Ramakrishna has two unique characteristics. One is its universal dimension. Sri Ramakrishna stands before the world as the image of the Universal Person— a person who is in harmony with every dimension of religious consciousness, who can respond to the aspirations of all people in the East and the West, and whose compassion for humanity knows no barriers of caste, creed or race. Secondly, his personaliy stands as the symbol of superhuman dimension and power.... Both these aspects of Sri

---

[1] श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत, तृतीय भाग, द्वितीय संस्करण, पृ० 358 द्रष्टव्य।

Ramakrishna's personality has been fascinatingly portrayed in the Gospel.'[1]

[श्रीरामकृष्ण के व्यक्तित्व के दो विशिष्ट पक्ष हैं। एक तो है उनका सार्वभौमिक विस्तार; एक सार्वभौम छवि लिए वे समग्र जगत् के समक्ष खड़े हैं— एक ऐसे जन जो सम्पूर्ण धार्मिक चेतना की प्रत्येक धारा का बड़े समभाव से वहन करते हैं, जो पूर्वी और पश्चिमी मानवता की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हैं और जिनकी समग्र मानवता के प्रति करुणाघन छवि जातिगत, सम्प्रदायगत और वंशगत मान्यताओं से ऊपर है। उनके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष है जो उनके अतिमानवीय विराट शक्ति के रूप में अवस्थित है।.... श्रीरामकृष्ण व्यक्तित्व के ये दोनों पक्ष कथामृत में अतीव आकर्षक रूप में चित्रित हुए हैं।]

श्रीरामकृष्ण के व्यक्तित्व के दो विशिष्ट पक्ष

अत: इस विषय में तो सन्देह की कोई गुंजाइश ही नहीं कि भगवान श्रीरामकृष्ण-भाव-सरिता के एक किनारे के रूप में नरेन्द्रनाथ का जीवन-चरित रहा जिसने उनके सार्वभौम सार्वदेशिक स्वरूप को उजागर किया। उसी भाव सरिता के दूसरे किनारे के रूप में आचार्य श्री म ने अपनी दैवी भूमिका निभाई जिसमें उन्होंने भगवान् श्रीरामकृष्ण के तपोपूत सर्वत्यागी अतिमानवीय अवतार वरिष्ठ आध्यात्मिक स्वरूप को अपनी जीवन शैली द्वारा प्रकाशित किया। श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के पाँचों भागों में इस भावधारा के वे इन दोनों पुष्ट किनारों की भावी भूमिका को स्पष्ट कर देते हैं। इस भावधारा के अपर कूल रूपी स्तम्भ के रूप में मिली भूमिका का निर्वहन करने के लिए श्री म को स्वयं गुरुदेव महाराज ने 'चपरास' देकर अधिकृत किया था। इसी अधिकार के फलस्वरूप उन्होंने समग्र जगत् के समक्ष उनका अतिमानवीय आध्यात्मिक प्रारूप प्रत्येक आगन्तुक के समक्ष रखा और उनका निरैश्वर्य प्रकृति के शिशु का अपरिसीम शक्ति सम्पन्न दैवी स्वरूप जन-जन को अहर्निश प्रस्तुत करते रहे।

---

[1] Sri Ramakrishna Kathamrita Memorial, Pg. 88

उपर्युक्त दोनों स्तम्भों की सर्वप्रथम उद्घोषणा सम्भवत: "युगान्तर"[1] में प्रकाशित एक लेख में मुखरित हुई है जहाँ कहा गया है—

'One of the two pillars of Neo-vedanta is the mighty lionic Swami Vivekananda and the other, M., the humble, quiet, wise and illumined proclaimer day and night of the glory of the Godman, Sri Ramakrishna. About him Sri Ramakrishna said, "With these very eyes, I saw you among the singers of Sri Chaitanya's *sankritana*.... You belong to the ever-perfected class.... You are my own, of the same substance as father and son.... You trade in the jewellery of the Spirit.... Ma! Illumine him. Otherwise how will he illumine others. Except for me he knows nothing." '

Ma! Illumine him

[नव्य वेदान्त के दो स्तम्भों में से एक तो हैं दिग्गज सिंह-पराक्रमी स्वामी विवेकानन्द और दूसरे हैं श्री म, विनयी, प्रशान्त, कुशाग्र बुद्धि और दैवी पुरुष श्रीरामकृष्ण के एक दिवानिशि महिमा-गायक। स्वयं भगवान रामकृष्ण ने उनके विषय में कहा था— इन्हीं चक्षुओं से मैंने तुम्हें चैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन में देखा था.... तुम मेरे अपने हो, पिता-पुत्रवत् एक ही मिट्टी के बने.... तुम तो आध्यात्मिक मणि-माणिक्यों के जौहरी हो.... माँ, उसे चैतन्यमय कर दो, अन्यथा दूसरों को कैसे चैतन्ययुक्त करेगा? मेरे अतिरिक्त तो वह अन्य कुछ भी तो नहीं जानता।]

इन दोनों दिव्यात्माओं के क्रिया-कलाप शैली में जैसी भिन्नता देखी गई है, वैसी ही इनकी स्वभावगत और व्यक्तित्वगत भिन्नता भी तदनुरूप ही दृष्टिगोचर हुई है। श्री श्रीठाकुर भी तो आखिर अपनी कार्ययोजना के अनुसार ही उन्हें अलग-अलग कार्यों के निमित्त इस धराधाम में लाए थे। एक के द्वारा जगज्जय करवानी थी, इसलिए उसे म्यान से निकली हुई तनी तलवार की तरह सर्वदा प्रस्तुत बनाया और रिमोट कन्ट्रोल अपने हाथ में

[1] मासिक पत्रिका

रखा। दूसरे को आचार्यत्व की दृष्टि से मानुष तैयार करने के लिए प्रशान्त, धीर, निरहङ्कारी आदि की दैवी सम्पद् से सम्पन्न बना दिया। श्री म को देखकर तो कई बार नरेन्द्र भी विस्मित हो जाया करते और कहा करते, 'बोलो ना मास्टर महाशय, आपने ऐसा क्या पा लिया है?'[1]

श्री श्रीठाकुर का शरीर चले जाने के बाद हम देखते हैं कि एक बार बराहनगर मठ में नरेन्द्र और मास्टर महाशय दोनों आपस में बातचीत कर रहे हैं। नरेन्द्र श्री श्रीठाकुर के पास जाने तक की अनेक पूर्वकथाएँ बता रहे हैं। नरेन्द्र 24 वर्ष 2 मास के हैं और मास्टर महाशय 32 वर्ष 8 मास के।

विनम्र और निरहंकारी श्री म

नरेन्द्र श्री म की नम्रता, प्रशान्तचित्तता और निरहंकारता से आश्चर्यचकित हैं और कहते हैं, "अच्छा मास्टर महाशय, (आप) इतने विनम्र और निरहंकार! कितनी विनय! मुझे बता सकते हो कि मुझमें इतनी विनय कैसे हो?"

मास्टर— उन्होंने कहा है, तुम्हारे अहंकार के सम्बन्ध में— यह 'अहम्' कार? (यह 'अहं' किसका है?)

नरेन्द्र— इसके क्या मायने हैं?

मास्टर— अर्थात् राधिका से एक सखी कहती है, तुझे अहंकार हो गया है— जभी कृष्ण का अपमान किया तूने! और एक सखी ने उसका उत्तर दिया था, हाँ, अहंकार श्रीमती का हुआ था सही, किन्तु यह 'अहं' किसका है? अर्थात् कृष्ण मेरा पति— यही अहंकार। कृष्ण ने ही यह अहं रख दिया है। ठाकुर की बात के मायने यही हैं कि ईश्वर ने ही यह अहंकार तुम्हारे भीतर रख दिया है, उनका काज करवा लेने के लिए।[2]

स्वामी विवेकानन्द Voice without form

स्वामी विवेकानन्द ने स्वयं के विषय में कहा था कि वे तो हैं श्री श्रीठाकुर की अमूर्त्त वाणी (Voice without form) और श्री म

---

1 अन्त्यलीला, स्वामी प्रभानन्द, पृ. 57

2 श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत, तृतीय भाग, द्वितीय संस्करण पृ॰ 385-86

तो हैं वाणी ही (His Master's Voice)। दोनों ही थे स्वभावत: अलौकिक प्रतिभावान् और अद्भुत मेधावी, परन्तु दोनों थे श्री श्रीठाकुर के वर्तमान युगोपयोगी सन्देश के ध्वजवाहक अपने-अपने स्वभाव के अनुरूप ही। श्रीकृष्ण के जैसे अर्जुन थे, वैसे ही श्री श्रीठाकुर के थे नरेन्द्र जो उनके सन्देश को विश्व के कोने-कोने में फैलाने के लिए आजीवन संघर्षरत रहे; और महेन्द्र थे एकजन जन्मजात 'कवि', 'मनीषी' जिन्हें श्री श्रीठाकुर ने अपनी वाणी रूपी भागवत रिकार्ड करने के लिए तदनुरूप ही गठित किया था। स्वामी सिद्धिनाथानन्द जी के शब्दों में—

श्री म हैं— His Master's Voice

"Mahendra is the Rishi that has preserved for us this modern revelation of the Veda. The spirit of the Gospel of Sri Ramakrishna but its body is M.'s. Behind every word of it is the hand of M. The world is laid under an irredeemable debt by this unpretentious recorder of the Gospel. It is photographic in its recording, poetic in its setting, dramatic in its description and absorbing in its appeal. Sri Ramakrishna is the flame, the Gospel the oil and Mahendra the wick of this everlasting Light of the spirit."[1]

निस्सन्देह महेन्द्र थे रामकृष्ण भावदर्शन की प्रचार-प्रसार-धारा के द्वितीय सशक्त स्तम्भ। प्रथम स्तम्भ नरेन्द्र तो श्री श्रीठाकुर के ऐश्वर्य-मण्डित रूप को जगत् के समक्ष स्थापित कर गए जिसके फलस्वरूप देश विदेश में चहुँ ओर बड़े-बड़े मठ-मिशन उमड़ पड़े और रातों-रात ठाकुर- भक्तों के जन समुदाय का एक कारवाँ बनता चला गया। दूसरी ओर श्री श्रीठाकुर के निरैश्वर्यमय गुणातीत स्वरूप के दर्शन-स्पर्शन और आलापन हुए श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत द्वारा ही। आइए,

नरेन्द्र, महेन्द्र हैं रामकृष्ण-भावधारा के दो स्तम्भ

[1] Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial, P. 237

स्वामी विमलानन्द जी के 80 वर्ष की आयु में 18 मई 1980 को लिखे एक परिपक्व जीवन-सन्देश को जानें—

"In the religious history of India, during the last one hundred years, two events are particularly remarkable. One is Sri Sri Swamiji's sojourn in the West for two couples of years representing Indian spirituality and his establishment of the Belur Math and the Order of monks after his return from the West. The second was the recording of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita by Master Mahashaya which has become the Bible for countless people devoted to our Master."[1]

[पिछले एक-सौ वर्ष के भारत के धार्मिक इतिहास में दो घटनाएँ विशेषतया महत्त्वपूर्ण हैं— एक है भारतीय अध्यात्मवाद के प्रतिपादन के लिए स्वामी विवेकानन्द का पाश्चात्य गमन और पश्चिम से लौटने पर बेलुड़ मठ तथा संन्यासी संघ की संस्थापना। दूसरा है मास्टर महाशय द्वारा एक ऐसे ग्रन्थ श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत का अनुलेखन जो हमारे गुरुमहाराज श्रीरामकृष्ण देव के असंख्य भक्तों के लिए 'बाइबल' बन गई है।]

अन्ततोगत्वा श्री म ट्रस्ट के संस्थापक प्रेज़िडेण्ट स्वामी नित्यात्मानन्द जी के शब्दों में प्रस्तुत लेख का उपसंहार किया जा सकता है—

'स्वामी विवेकानन्द ने इसी बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जगत् के अति ऐश्वर्यशाली अमेरिकावासियों को परामर्श दिया था, तुमने अब ऐश्वर्य और जगत् के भोग की चरम सीमा पर आरोहण किया है। देख रहे हो कि इससे चित्त शान्त न होकर दिन-दिन अशान्त हो रहा है। इस अशान्त चित्त को शान्त करने का भाइयो, एक ही उपाय है— तुम लोग अब आत्मचिन्तन में मनोनिवेश करो। वैसा होने पर इस अतुल ऐश्वर्य के भीतर रहकर भी अधीर नहीं होवोगे, मन की शान्ति की रक्षा कर सकोगे। काम, क्रोध आदि की सीमा के बाहर मन को ले जाकर शान्ति की खान परमात्मा

---

[1] Sri Ramakrishna Kathamrita Memorial Blessings and Messages

के साथ मिला दे सकोगे। तब काम, क्रोध आदि तुम्हारा कोई भी अनिष्ट नहीं कर सकेंगे, तुम्हारे मन को विचलित नहीं कर सकेंगे।

'ऋषियों की यही महावाणी युग-युग में राम, कृष्ण, बुद्ध, क्राइस्ट आदि देवमानवों ने ध्वनित और प्रतिध्वनित की है। यही उस दिन भगवान श्रीरामकृष्ण ने भी उसी प्रतिध्वनि में अपना कण्ठ-स्वर मिला दिया है। वे स्नेहमयी जननीवत् आकुल प्राण से, व्याकुल अन्तर से जगत्वासियों से कहते हैं— जगत् के मालिक के संग सम्पर्क बनाकर सर्व कार्य करो। उपलक्ष्य नरेन्द्र और महेन्द्र हैं।'[1]

—डॉ. नौबत राम भारद्वाज

[1] श्री म दर्शन, सप्तम भाग, भूमिका पृ० xvi

सिख गुरु और श्रीरामकृष्ण

[श्री म भक्तों के संग हिन्दुओं के सब सम्प्रदायों के मन्दिरों में जाते। वे चर्च, मस्जिद, बौद्ध विहार, जैन मन्दिर, आर्यसमाज, गुरुद्वारों में भी सर्वदा यातायात करते। इसके पीछे थी ठाकुर की प्रेरणा और शिक्षा कि सब पथों द्वारा ही उनको पाया जाता है।]

आज है 2 जनवरी, 1925 ईसवी; 18वाँ पौष, शुक्रवार; शुक्ला अष्टमी, 38 दण्ड/29 पल।

साढ़े पाँच के समय श्री म ऊपर आए। साधु के संग दो-चार ही बातें करके डॉक्टर की गाड़ी में विनय और डॉक्टर को लेकर मेछुआ बाज़ार सिख-संगत के लिए रवाना हो गए। भक्तों को भी पीछे आने के लिए कहा।

चित्पुर रोड के आसपास। जगबन्धु, छोटे जितेन, गदाधर, बुद्धिराम, मनोरंजन, विजय आदि पैदल जाकर पहुँचे। श्री म 'दरबार' के सामने द्वितल पर वीरासन में युक्तकर बैठे हैं। फूलों की अपूर्व सजावट है। घर के भीतर है फूलों का कमरा और प्रकाश की बाढ़। विद्युत् के आलोक से कमरे में चकाचौंध हो गई है। कमरे के भीतर एक घी का प्रदीप भी है। दीवाल पर रामसीता, चैतन्यसंकीर्त्तन आदि की छवियाँ हैं। कुछ काल पीछे श्री म ने उठकर उत्तर के कमरे में प्रवेश किया। यहाँ पर हैं राधाकृष्ण, शिव, शालग्राम आदि। श्री म ने भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया। एक साधु बैठे हैं— पुजारी। उन्होंने उठकर भक्तों के सहित श्री म को तुलसी और किशमिश प्रसाद दिया।

श्री म नीचे उतर कर सीढ़ी के मूल में खड़े हैं। उनके पीछे ही हैं अन्तेवासी। उनके कान के पास मुख रखकर कहते हैं, "आहा, ठाकुर ऐसा impetus (प्रेरणा) दे गए हैं जो इन सब स्थानों पर वे ही लाते हैं।"

डॉक्टर ने जिज्ञासा की, "क्या impetus (प्रेरणा)?"

सब पथों द्वारा ही उनको पाया जाता है

"अन्तेवासी और श्री म ने एक साथ उत्तर दिया, सब पथों द्वारा ही उनको पाया जाता है, यही शिक्षा।"

मोटर के निकट आकर श्री म खड़े हैं। ड्राइवर को लक्ष्य करके बोले, "ये जाकर दर्शन कर आएँ।" ड्राइवर दर्शन करने गया और भक्तों ने भी विदा ली। वे लोग पैदल कोटन स्ट्रीट के गुरुद्वारे में जाकर उपस्थित हुए। श्री म पीछे आए। सफेद पगड़ी सिर पर बाँधे एक सिख साधु श्री ग्रन्थ साहब की आरती करते हैं— कपूर की आरती। आरती शेष हुई। अब और एक साधु 'अरदास' (स्तुति) करते हैं। उनके सिर पर काली पगड़ी है, कन्धे पर 'कृपाण' झूल रही है।

'प्रथम भगौती सिमर कै गुर नानक लईं ध्याय।
फिर अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होईं सहाय।
अर्जन हरगोबिन्द नो सिमरौ श्री हरिराय।
श्री हरिकृष्ण ध्यायिअै जिस डिठै सभ दुख जाए।
तेग बहादर सिमरिअै घर नौ निध आवै धाय।
श्री गुरु गोबिन्दसिंहजी महाराज धर्मवीर सभ थाईं होय सहाय।'

श्री म को एक वृद्ध सिख भक्त ने सविनय पूछा, "महाराज का दौलतखाना कहाँ है?" दोनों जनों में कुछ बातें हुईं। श्री म ने पूछा, "यहाँ पर साधुओं की भिक्षा की व्यवस्था है क्या?" साधु ने उत्तर दिया, "हाँ जी, महाराज, सन्तों के लिए परसाद का इन्तजाम है। लंगर खुला है।"

श्री म दरबार साहेब (गुरु ग्रन्थसाहब) के पीछे दीवाल पर टंगी हुई अमृतसर के 'हरमन्दिर' (स्वर्ण मन्दिर अथवा दरबार साहेब) की छवि देखते हैं। वृद्ध सन्तजी भी उठ कर गए। वे उस मन्दिर का इतिहास बताने लगे— गुरु रामदास ने बनाया था, ये चतुर्थ गुरु हैं। महाराजा रणजीत सिंह ने स्वर्ण द्वारा श्वेत पत्थर के मन्दिर को मढ़ दिया। सिखों का 'अकाल तख्त' (परब्रह्म की गद्दी) उसी स्थान पर है। उस स्थान से जो हुकम होगा, उसको सब सिखों को मानना पड़ता है। वहाँ पर चौबीस घण्टे पूजा-पाठ और भजन चलता है।

श्री म के सिर की चादर गिर गई। वृद्ध साधु ने पुनः सिर पर ढक दी। सिखों के गुरुद्वारे में प्रवेश करने पर सिर ढका रखने की विधि है। मस्जिद में भी ऐसा ही नियम है। साधु ने श्री म को बताया, नया साल है, इसलिए मकान पुताई हो रहा है।

और एक सिख भक्त आकर श्री म को अन्य एक बड़ी छवि के निकट ले गए। जहाँगीर ने बहुत से भारतीय राजाओं को बन्दी किया था। षष्ठ गुरु हरगोबिन्दसिंह ने उनको मुक्त कर लिया।

अब 'कड़ाह परसाद' (हलवा) और कई-कई टुकड़े अमरूद सब को हाथों में दिए। श्री म और भक्तगण नीचे उतर गए। दरवाज़े के मूल में आकर श्री म बोले, "चालीस-बयालीस वर्ष पहले एक बार यहाँ पर आया था। बहुत बदल गया है।" श्री म ने इस मन्दिर में आज तीन स्थानों पर तीन बार भूमिष्ठ प्रणाम किया।

भक्तगण पैदल 172 नं० हैरीसन रोड पर राजा रामसिंह की बाड़ी में आए। यहाँ पर भी गुरुद्वारे में उत्सव है। आते समय भक्तों ने श्री म से पूछा था, वे भी उस स्थान पर जाएँगे कि नहीं? उन्होंने उत्तर में कहा था, हाँ। किन्तु भक्तों के रवाना होने पर मत बदल गया। श्री म क्रोस स्ट्रीट 79 नं० में, बड़ी संगत में गए।

राजा रामसिंह की बाड़ी के गुरुद्वारे में भक्तगण नीचे बैठकर गुरुग्रन्थ-पाठ सुनते हैं। ग्रन्थी सिंहासन के ऊपर दक्षिण-पश्चिममुखी बैठकर पढ़ते हैं। गुरुमुखी भाषा है। ब्रह्मज्ञानी और सत्संग की महिमा का पाठ चल रहा है— महल्ला पाँच। अर्थात् पञ्चम गुरु अर्जुनदेव का 'सुखमनी' पाठ होता है। कैसा मधुर सुर है! जैसा भाव है, वैसी ही है भाषा। यह ही सिखों की गीता है— भक्तगण नित्य पाठ करते हैं।

पाठ होता है :

सगल पुरखु महि पुरखु प्रधानु।
साध संगि जाका मिटे अभिमानु॥

x x x

साध की महिमा बरनै कउनु प्राणी।
नानक साध की शोभा प्रभ माहि समानी॥

x x x

साध की महिमा वेद न जानहि।
नानक साध प्रभ भेदु न भाई॥

पाठक हिन्दी-अनुवाद करके बोलते हैं— वे ही पुरुष-श्रेष्ठ हैं जिनका अभिमान साधुसंग द्वारा विनष्ट हो गया है। ...साधु की महिमा के वर्णन की शक्ति किसमें है? हे जीव, साधु शोभा में श्री भगवान के समान है।

साधु-महिमा

साधु की महिमा को वेद भी नहीं जानता...। हे भाई, साधु और भगवान में कोई भेद नहीं।

श्री म कुछ पीछे आकर गुरु-मन्दिर के साथ दक्षिण की ओर के स्तम्भ के पास बैठे हैं। निविष्ट होकर सुनते हैं। श्री म के दक्षिण हाथ पर हैं डॉक्टर। पीछे छोटे नलिनी, बुद्धिराम और मनोरंजन। बायीं ओर हैं गदाधर, विनय, छोटे जितेन, विजय और जगबन्धु।

रात्रि प्रायः आठ। श्री म विदा लेते हैं। प्रणाम करके उठने पर कर्मकर्त्ता एक वृद्ध सिख भक्त आकर हाथ जोड़ कर कहते हैं, "बिनती है कि इतवार को दस-ग्यारह बजे ज़रूर दर्शन देना। अखण्ड पाठ समाप्त होगा।"

वृद्ध ने युक्तकरों से अभिवादन किया, 'सत् श्री अकाल'।

अगला दिन : 3 जनवरी, 1925

श्री म *(ललित आदि के प्रति)*— हम कल सिखों के वहाँ पर गए थे चार स्थानों पर— मेछुआ बाज़ार, कोटन स्ट्रीट, क्रोस स्ट्रीट और हैरिसन रोड। गुरु गोबिन्द सिंह का जन्मोत्सव था। आहा, कैसी सुन्दर तरह से सब

सिख गुरु और हिन्दुत्व रक्षा

सजाया था! एक स्थान पर थी फूलों की सजावट। कितनी भक्ति, श्रद्धा। गुरुद्वार ही हो चाहे। गुरु माने भगवान। गुरु के ऊपर भक्ति होने से समझना होगा भगवान् के ऊपर भक्ति आई है। गुरु और इष्ट अभेद। सिखों की गुरुओं के ऊपर अतिशय श्रद्धा है। हिन्दुमात्र की ही श्रद्धा है। 'गुरुगण' इस समय नहीं आते तो पंजाब में हिन्दु धर्म की नामगन्ध भी नहीं रहती। सब मुसलमान हो जाते। जोर ज़बरदस्ती करके सबको मुसलमान धर्म में

(convert) (दीक्षित) करते थे कि ना। प्रतिवाद करने पर गुरु अर्जुनदेव को जहाँगीर ने मार ही डाला था। जहाँगीर ने कहा था, या तो उसको मुसलमान पीर बनाना, नचेत् समाप्त करना होगा। उनकी सांसारिक बुद्धि, निष्काम कर्म, गम्भीर त्याग, ईश्वर में अटूट विश्वास, महान् हृदय, देशप्रीति और धर्मविश्वास, और उज्ज्वल ज्ञान और योगशक्ति देखकर हिन्दुगण उनके आश्रय में संघबद्ध हुए थे। राजे-महाराजे पर्यन्त उनकी सहायता और परामर्श लेते थे। इन्होंने ही सिखों को प्रथम संघबद्ध करने की चेष्टा की थी। गुरुग्रन्थ साहेब उनकी रचना और अमर कीर्त्ति है। आहा, क्या ही समस्त बातें कल सुनी गई थीं। प्राण शीतल हो जाते हैं। जैसा गाम्भीर्य, वैसा ही प्रेम। गुरुमुखी भाषा के अक्षर नहीं थे। इन्होंने उसका आविष्कार किया। लाहौर में राज-आज्ञा से उनकी बड़ी ही निष्ठुर भाव में हत्या की गई थी। एक कढ़ाई में बिठाकर नीचे आग जला दी और सिर के ऊपर गर्म रेत डाल दी। इतने अत्याचार पर भी ज्ञान और भगवान का विश्वास अटूट था। अमृतसर, तरणतारण में उनकी अमर कीर्त्ति-गाथा का घर-घर में कीर्त्तन होता है।

"कल सुना था 'सुखमनी' पाठ— कैसी मधुर भाषा और भाव! गुरु अर्जुनदेव-रचित। गीता की भाँति उसका पाठ-कीर्त्तन भी सुर से रोज़ घर-घर में होता है। लगता है, वे गाने की भी एक बड़ी authority (अधिकारी) थे। कारण गुरुग्रन्थ साहेब की वाणी समस्त उच्च classical (उत्तम शास्त्रीय राग) में गाई जाती है। साधुसंग की कैसी महिमा का ही सुखमनी में कीर्त्तन किया है और नाम-माहात्म्य। अर्थात् रूप का माहात्म्य। समस्त गुरुग्रन्थ साहेब ही साधुसंग और सेवा की बातों से परिपूर्ण है। जभी तो पंजाब में इतनी साधुभक्ति और साधुसेवा है।

गुरुग्रन्थ साहेब में साधु-भक्ति और साधुसेवा

सिख भक्तजन ठाकुर से कभी-कभी कहते : तुम्हीं गुरु नानक हो

"निस्सन्देह गुरुनानक इसके प्रधान प्रवर्त्तक हैं। गुरु नानक को वे लोग ईश्वर का अवतार मानकर विश्वास करते हैं। ये चैतन्य देव के समसामयिक हैं। सोलह वर्ष बड़े थे। *(सहास्य)* ठाकुर कभी-कभी कहते थे, सिख लोग

तुम्हीं गुरुनानक

कहते हैं, तुम्हीं गुरु नानक हो। दमदमा के वे सब सिख सैनिक भक्त लोग आते थे कि ना! उनके लिए माँ के पास ठाकुर ने रो-रोकर प्रार्थना की थी, 'माँ इनका कल्याण करो।' दो-चार घण्टे की छुट्टी मिलते ही वे भागे हुए आते थे। जभी माँ से कहा था, 'माँ, इनका कल्याण करना ही होगा। देखो, ये तुम्हारे पास भागे-भागे चले आते हैं। इतने व्याकुल हैं।'

"ईश्वर की शक्ति का जहाँ पर ठीक-ठीक प्रकाश होता है, वहाँ पर ही ईश्वर के लिए व्याकुलता होती है। धर्म का बाहिरी आचरण तो चिरकाल से है और रहेगा। किन्तु अवतार के आने से व्याकुलता बढ़ती है। यही तो है नूतन वस्तु और फिर धीरे-धीरे चली जाती है।

"मैं एक बार सिखों के मुहल्ले में कुरुक्षेत्र में गया था। एक घर में अतिथि हुआ। आहार आदि सब हुआ। वे बहुत ही अतिथि-सेवा परायण हैं। यह भी है गुरुओं की एक अन्यतम शिक्षा। कुरुक्षेत्र पंजाब में है कि ना।"[1]

डॉक्टर ने श्री म के हाथ में एक पुस्तक 'सुखमनी साहेब' लाकर दी— गुरुमुखी का बंगला-अनुवाद सहित। श्री म ने उस पुस्तक को हाथ में लेकर मस्तक से स्पर्श किया। अब बातें करते हैं।

माँ ही सब होकर रह रही हैं

श्री म *(भक्तों के प्रति)*— ठाकुर हम लोगों को नाना स्थानों पर क्यों ले जा रहे हैं?— दिखाने के लिए कि वे ही सब होकर रह रहे हैं। सिखों का जो उत्सव है, वे भी वही हैं, जिसके लिए हो रहा है (गुरु गोबिन्द सिंह जी) वे भी हैं वे ही (ठाकुर)। और जो करते हैं, वे भी वे ही (ठाकुर)। ठाकुर ने कहा था कि ना, 'मैं देख रहा हूँ, माँ ही सब होकर रह रही हैं।' और कभी-कभी कहते थे, 'इस गिलाफ़ के भीतर माँ आ गई हैं।' अर्थात् ठाकुर ब्रह्म-शक्ति का अवतार हैं।

"हमारी आँखों पर ऐसा चश्मा पहना दिया है। जभी सब लाल दिखाई देता है, सब अपने ही लगते हैं। ऐसा लगा जैसे अमृतसर ही गया

---

[1] अब कुरुक्षेत्र हरियाणा में है।

हूँ। अमृतसर में दरबार साहेब में दिन-रात उत्सव-आनन्द होता रहता है। कैसा ज्ञान और भक्ति देकर सबको मतवाला कर रखा है। दिन-रात पूजा, पाठ, आरती, भजन और फिर प्रसाद-वितरण, कड़ाह प्रसाद। पञ्चभूतों से

उनकी ओर मोड़ फिरा देने से ही हुआ

जीव आबद्ध रहता है; और फिर उसके द्वारा ही मुक्त भी होता है। उनकी ओर मोड़ फिरा देने से ही हुआ। रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श—इन सब के द्वारा उनकी पूजा। किस प्रकार की समस्त फूलों की सजावट गुरुद्वारे में देखी गई। मनुष्य जिसको पसन्द करता है, वही उसको देना। उनको देकर प्रसादरूप में भोग करने पर क्रमशः मुक्ति होगी। निज भोग करने से बन्धन ही खाली बढ़ेगा।"

श्री म 'सुखमनी' खोलकर बीच-बीच में से पढ़ते हैं। अब अष्टम सर्ग— ब्रह्मज्ञानी का लक्षण।

श्री म—

ब्रह्म गिआनी सदा निरलेप। जैसे जल महि कमल अलेप॥
ब्रह्म गिआनी सदा निरदोखि। जैसे सूरु सरब कउ सोख॥
ब्रह्म गिआनी कै दृसटि समानि। जैसे राज रंक कउ लागे तुलि पवान॥
ब्रह्म गिआनी कै धीरजु एक। जिउ वसुधा कोउ खोदै कोउ चन्दन लेप॥
ब्रह्म गिआनी का इहै गुनाउ। नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ॥

ब्रह्मज्ञानी का लक्षण

श्री म ने बंगाली पढ़ी— "ब्रह्मज्ञानी है सदा निर्लेप, जैसे पद्मपत्र पर

ब्रह्मज्ञानी सदा निर्लेप

जल। सूर्य जैसे भले-मन्दे सबको ही धूप देता है किन्तु स्वयं सदा पवित्र रहता है, ब्रह्मज्ञानी वैसे ही निर्दोष है। पवन जिस प्रकार राजा और क्रीतदास दोनों को समान भाव से स्पर्श करती है, ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि वैसे ही सब के ऊपर समान है। धरती का टुकड़ा चावल से पूजो अथवा चन्दन से— उसके धीरज की सीमा का कभी भी लंघन नहीं कर सकते, वैसे ही ब्रह्मज्ञानी धीर है। अग्नि की न्यायीं ब्रह्मज्ञानी सर्वपावक है।"

संकलन : डॉ. निर्मल मित्तल

स्रोत : श्री म दर्शन-8, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 246-249 और 253-257

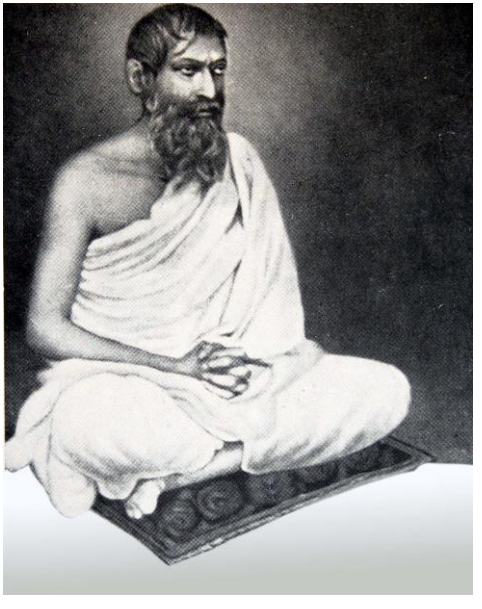

श्री म (मास्टर महाशय)
(1854-1932)

- पूरा नाम : श्री महेन्द्रनाथ गुप्त
- जन्म : शुक्रवार, नाग पञ्चमी, 31वाँ आषाढ़, 14 जुलाई, 1854 ईसवी।
- स्थान : कोलकता में शिमुलिया मोहल्ले की शिवनारायण दास लेन।
- माता-पिता : श्रीमती स्वर्णमयी देवी और श्री मधुसूदन गुप्त— वैद्य ब्राह्मण वंश।
- भाई-बहन : 4 भाइयों और 4 बहनों में तीसरी सन्तान।
- विवाह : सन् 1873 में श्रीमती निकुञ्ज देवी के साथ।
- शिक्षा :
  - सन् 1867 में आठवीं कक्षा से डायरी लेखन।
  - हेयर स्कूल से दसवीं की परीक्षा में द्वितीय स्थान।
  - गणित का एक पेपर न दे सकने पर भी एफ.ए. में 5वाँ स्थान।
  - सन् 1875 में प्रेजिडैंसी कॉलेज से बी.ए. में तृतीय स्थान।
  - पूर्वी और पश्चिमी विद्याओं में निपुणता।
- गुरु : श्रीरामकृष्ण परमहंस
- गुरु-लाभ : 26 फरवरी, सन् 1882 को रविवार के दिन।
- महासमाधि : शनिवार, 4 जून, सन् 1932 ईसवी को प्रात: 5.30 बजे।

मास्टर महाशय के सदुपदेश

तीर्थ में रहना तो अच्छा है। अग्नि सर्वदा जल रही है, सेक लेने से ही हो जाता है।

संसार युद्ध-क्षेत्र है, अनवरत युद्ध चलता है। म्यान से निकली तलवार होकर रहना उचित है– सर्वदा जाग्रत, सशस्त्र सैनिकवत्। कब क्या विपद् घटे?

जिसकी दान करने की शक्ति है, वह दान करेगा।

ठाकुर बोलते, जल नीचे की ओर जाता है, उसका स्वभाव ही वैसा है। किन्तु यह भी बोला था, सूर्य के आकर्षण से ऊपर भी जाता है। ईश्वरीय कृपा होने पर दुर्दमनीय प्रकृति भी बदलती है।

ठाकुर के जितने उपदेश हैं, उन्हें एक महावाक्य में कहना हो तो कहना होगा आदि में साधुसंग, मध्य में साधुसंग और अन्त में साधुसंग। शरणागति-योग का हृदयकेन्द्र है साधुसंग, साधुसेवा। पथ कितना सहज कर दिया है। साधुसंग को पकड़े रहो, अन्य सब आप ही आएगा। बछड़े को पकड़े रखने से गाय अपने आप ही आएगी हम्बा-हम्बा करती हुई। 'गाय' माने ईश्वर। उनके आने से उनका सात्त्विक ऐश्वर्य संग ही आता है।

— 19.09.1923

ईश्वर की इच्छा से ही सब होता है। जब जो प्रयोजन, वे करते हैं। इस युग में जो प्रयोजनीय है, वही किया है परमहंस देव ने।

नाना सम्प्रदाय होंगे ही— sects are inevitable. मनुष्यों का मन भिन्न-भिन्न; जभी भिन्न-भिन्न पथ। इसीलिए ही तो विभिन्न सम्प्रदाय सृष्टि हुए हैं। मनुष्य ने कुछ नहीं बनाया। बाहर की ओर से देखने से मन में होता है अमुक ने अमुक सम्प्रदाय किया है। वस्तुतः वह बात नहीं है। सबके कर्त्ता ईश्वर हैं।

विज्ञान के प्रभाव से यातायात बढ़ गया है। सब देशों की खबर सब प्राप्त करते हैं। इस समय स्वतन्त्र रहना नहीं चलता। जभी ठाकुर सकल मनुष्यों के सम्मिलन का साधन कर गए हैं मूल में, आत्मा में। सब ही तो अमृत की सन्तान हैं— 'अमृतस्य पुत्राः।' इसे ही नए रूप में करके दिखाकर जगत् के लोगों के सामने रख गए हैं। नर-नारायण की पूजा इसीलिए तो वे कर गए हैं।

विभिन्न धर्ममतों का साधन करके सब पथों से एक ही ईश्वर में पहुँच कर बोले, 'मत पथ'। एक ओर सर्व-धर्म-समन्वय, संग-संग मनुष्यों का भी समन्वय नारायण में— यही महाकार्य परमहंसदेव कर गए हैं, जगत् के कल्याण के लिए।

— 25.09.1923

मनुष्य के भीतर तीन शरीर होते हैं— स्थूल, सूक्ष्म और कारण। इन तीन शरीरों को ही जिससे क्रमशः वा एक समय में आहार पहुँचे, उसकी व्यवस्था दरकार है। स्कूल, कॉलेज में तो सूक्ष्म शरीर के आहार की व्यवस्था होती है। कारण शरीर के संग योग रखकर शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। उससे चरित्र सुगठित होगा। शान्ति, आनन्द आएगा। Highest ideal (सर्वश्रेष्ठ आदर्श) के संग में योग रखकर सब करना होगा। नहीं तो नैतिक चरित्र दृढ़ होगा नहीं। भारत की शिक्षा की इस व्यवस्था के कारण ही भारत की संस्कृति इतनी सुदृढ़ और उच्च है। गुरुगृह में इन तीन शरीरों के विकास की व्यवस्था थी। हमारे विद्यापीठ में अनादि महाराज आदि ने सुन्दर किया है। सब उत्तम टीचर तैयार होते हैं। छात्रों के उन तीन शरीरों के ही आहार की व्यवस्था होती है।

उनके अनन्त भाव हैं, अनन्त काण्ड हैं। इतना सब झंझट मिटाने के लिए बीच-बीच में वे आते हैं मनुष्य होकर। आ कर, दो-चार बातें सार रूप में कह जाते हैं। अब कुछ दिन वही बातें लेकर चलते रहो। फिर आ कर फिर और बोल जाएँगे। ऐसे ही चलता है।

— 26.09.1923

ठाकुर जभी कहा करते, 'लोटा रोज माँजना।' अभ्यास योग। अज्ञानान्धकार के पार जो ज्योतिर्मय पुरुष अर्थात् भगवान हैं, उनको भावते-भावते यदि प्राण जाएँ तो फिर उनकी ही प्राप्ति होती है। उसके लिए ही शरीरत्याग के पूर्व ही प्रस्तुत होना चाहिए।

समाधिस्थ होकर तो सर्वदा रहा जाता नहीं। जभी नीचे आने पर एक भाव लेकर रहना पड़ता है। एक जीवन्त भाव रहना आवश्यक है। इसका नाम है प्रैक्टिकल वेदान्त।

— 21.03.1924

साधुसंग करना होता है। और अभ्यास योग द्वारा भी होता है। जभी चक्षु बन्द करके ध्यान करना होता है। चक्षु खोलकर भी ध्यान होता है। देखते हुए कौन ध्यान कर सकते हैं? जिनका पक्षीवत् मन हो गया है— अण्डे से रहा है। आँखें अर्ध-निमीलित हैं; मन रहता है अण्डों में। वैसे ही जिनका मन सर्वदा ईश्वर में रहता है, वे खुली आँखों से ध्यान कर सकते हैं।

अवतार जब आते हैं तब है अति सुविधा। तब धरती पर भी एक-एक बाँस जल। अन्य समय अति चेष्टा से। मिट्टी खोदने पर भी जल मिलता नहीं। किन्तु अवतार आने से खूब (सुयोग) है। आयोजन कितना है! किन्तु ग्रहण करने वाले लोग तो नहीं।

अवतार की language (भाषा) ही पृथक्। अवतार के आने के पूर्व पण्डित लोग उलट-पलट करके शास्त्र का अर्थ करते हैं। किन्तु अवतार के आने पर शास्त्रों का प्रयोजन नहीं रहता। इतना पढ़ना नहीं पड़ता। उनके मुख से शास्त्र-व्याख्या सुनने से ही हुआ। शास्त्र का यथार्थ अर्थ वे प्रकाश करते हैं, अपनी बातों और आचरण में। अवतार के न आने से लोग कठिनाई में पड़ जाते हैं पण्डितों की व्याख्या सुनकर। जभी तब उपाय को ही उद्देश्य समझने लगते हैं।

— 22.03.1924

तीर्थ पर जाकर क्या-क्या करना चाहिए?

प्रथम, चरणामृत लेना चाहिए। द्वितीय, बैठना चाहिए। तृतीय, गान या स्तोत्र-पाठ उच्च स्वर से करना चाहिए। दक्षिणेश्वर जाने पर माँ काली और ठाकुर को गाना सुनाना चाहिए। चतुर्थ, साधु और ब्राह्मण-भोजन करवाना चाहिए।

कुछ दिन मठ में रहना उचित। प्राचीन साधुगण सब हैं। उनकी सेवा करनी चाहिए। उनका काज-कर्म, चलन-बलन-watch (दर्शन) करना चाहिए। गीता में है, 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा।' कुछ दिन मठ में रहकर रंग पकड़ लेने पर फिर अन्यत्र जाना। काजकर्म या तपस्या लेकर रहना। प्रथम मठ में रहना दरकार।

— 24.03.1924

पुरुषार्थ आवश्यक है। चेष्टा बिना किसी का भी कुछ होता नहीं। ध्यान, जप, कीर्तन, प्रार्थना, ये सब करते-करते उनमें भक्ति होती है। भक्ति के परे ही व्याकुलता; व्याकुलता के परे ही दर्शन।

ईश्वर-कृपा ही मूल है। उनकी कृपा बिना तो कुछ भी होने वाला नहीं। चेष्टा भी उनकी कृपा से होती है। जप-ध्यान-प्रार्थना, रो-रोकर कहना, ये सब करने पर और भी कृपा होती है। तभी व्याकुलता होती है, जिसके उपरान्त दर्शन होता है।

— 27.03.1924

उन्होंने यह हमारा देह-यन्त्र बनाया है कि इन्द्रियाँ, प्राण, मन, बुद्धि द्वारा इसी देह में ही उनका दर्शन होता है। इसी नश्वर वस्तु की सहायता से नित्य वस्तु प्राप्त होती है। ठाकुर जभी तो बोलते, इसी पंक के भीतर से पद्म-फूल खिलता है। सशक्त चाहे है, किन्तु होता है उनकी कृपा से ही।

बाहर के शोकादि इसलिए रखे हैं कि इधर का चैतन्य होगा और भीतर के कामक्रोधादि हैं इसलिए कि ये दमन कर सकने पर majestic height (अति उच्च भूमि) पर चढ़ाएँगे। उन्होंने यह सब व्यवस्था कर रखी है। वे तो हैं माँ, सर्वमंगला।

— 28.03.1924

ठाकुर ने कहा था, 'जो आन्तरिक ईश्वर को पुकारेगा, उनको यहाँ आना ही होगा।' यहाँ पर माने ठाकुर के पास, अर्थात् उनका भाव लेना होगा। तभी पूर्णकाम होगा। वे आए ही हैं इसीलिए, भक्तों को उठाने। सारे जगत् भर में जो जहाँ पर आन्तरिक ईश्वर को पुकारता है, सब को ही ठाकुर का उदार भाव लेना होगा।

— 04.04.1924

यही देखिए ना, आकाश में मेघ गड़गड़ा रहा था, निमेष में उड़ गया सब! वैसा ही अज्ञान-अन्धकार जाने पर ज्ञान मुहूर्त में, झट से दिखाई देता है। गृहस्थ का अड्डा अर्थात् भोग का अड्डा। शरीर पर वर्म पहनकर और हाथ में sword (तलवार) लेकर वहाँ जाना चाहिए— with a coat of mail and a sword in hand. तब फिर और भय नहीं रहता।

— 22.04.1924

मनुष्य जन्म के समय जैसे आँख खोलकर सब देखता है, वैसे ही मृत्यु के समय भी (चक्षु अर्धमुद्रित करके) ऐसे करके रहता है। सब इन्द्रियों ने जवाब दे दिया है। तो भी जो तनिक चेष्टा भीतर रहती है, वह केवल आत्म-रक्षा-जन्य होती है। वह ही तो है अविद्या।

ऐसे लोग भी उन्होंने किए हैं जिनका मन है कच्छपवत्— भीतर रहता है भगवान के पादपद्मों में। वहाँ से मन को बाहर नहीं करेंगे। इन्हें ही कहते हैं महात्मा।

— 28.04.1924

चीनी के पहाड़ पर एक बार एक चींटी गई थी। एक बड़ा-सा चीनी का दाना मुख में डाल ले गई। जाते-जाते सोचने लगी, एक बार फिर आकर सारे-का सारा पहाड़ मुख में डालकर ले जाऊँगी।

जैसे ये सब विचार हैं, ईश्वरीय विषय में सोचना भी वैसा ही है— अनधिकार चर्चा। इस विषय में केवल expert opinion (अभिज्ञजनों का मत) ही कार्यकरी है।

ठाकुर ने स्त्रियों के दो भाग किए— विद्याशक्ति और अविद्या शक्ति। विद्या शक्ति स्त्री पति की help (सहायता) करती है भगवान के पथ पर जाने में; और अविद्या शक्ति पति को संसार में बद्ध करती है, ईश्वर से उल्टे पथ पर विषय-भोग में ले जाती है।

भारतीय विवाह का meaning (मर्मार्थ) क्या है? स्त्री की सहायता से ईश्वर-दर्शन करने की प्रचेष्टा। महाशक्ति का अंश है कि ना स्त्री। अविद्याशक्ति का रूप ही तो। ईश्वर-दर्शन पति की अकेले की शक्ति से हो पाएगा नहीं। जभी पति-पत्नी की सम्मिलित शक्ति का प्रयोजन है। तभी विवाह।

— 29.04.1924

वे जब लकड़ी खींच लेते हैं, तब सब ठण्डा। लकड़ी थी इसलिए दूध 'फोंस-फोंस' करता था। खींचते ही फोंस-फोंसानी बन्द हो गई। भगवान जब तक इच्छा करते हैं, तब तक ही मनुष्य उनका काज कर सकता है। उनकी इच्छा बिना कुछ नहीं होता।

निष्कामभाव से उनकी कथा कहने से चित्तशुद्धि होती है, जैसे निष्काम भाव से रोगी की सेवा करने से अथवा निरन्नक को अन्न देने से होता है। कोई सेवा करता है स्थूल शरीर की, कोई सूक्ष्म शरीर की, कोई कारण शरीर की। तीनों शरीरों की सेवा ही निष्काम होकर करने से चित्तशुद्धि होती है। तब ईश्वर में शुद्ध ज्ञान-भक्ति लाभ होता है।

ठाकुर कहते, श्रीकृष्ण बड़ी मुश्किल में पड़े हैं। रानी, अर्थात् माँ यशोदा खींचती हैं अंक की ओर, गोपाल खींचते हैं वन में, और राई (राधा) खींचती है नयन में। अब श्याम कहाँ जाएँ? यही अवस्था है मनुष्य की। नाना ओर से नाना आकर्षण आ जाते हैं। उससे ही उद्विग्न हो उठता है। तभी अशान्ति।

जभी एक ही आदर्श पकड़े रहना अच्छा है। नाना चीज़ों के विषयों में घूमने से एक में मन बैठता नहीं। सब मत ही पथ, ठाकुर का महावाक्य है। सब मतों को ही (नमस्कार मुद्रा में) नमस्कार करता हूँ! हम उनकी (ठाकुर की) वाणी ही एक प्रकार से बालकपन से ही चिन्तन कर रहे हैं।

इसीलिए उनकी वाणी के अनुसार चलने की चेष्टा करते हैं। यह क्या बोलता है, वह क्या बोलता है, सब देखने जाने का समय कहाँ? इधर जो हो जाती है (मृत्यु किसी भी समय)!

आँखों के सामने देख रहे हो, कौन कब चला जाता है। यही बात ही तो सुनाने आते हैं अवतारगण। वे बार-बार आकर एक ही बात सुनाते हैं— अनित्य वस्तु लेकर इतनी नाचानाची मत करो। नित्य वस्तु ईश्वर का स्मरण करो। यदि कहो, इनकी बात क्यों सुनूँ, क्या प्रमाण है कि जो ये अभ्रान्त हैं? सूर्यकिरण देखने के लिए अन्य आलोक जलाना पड़ता है क्या? स्वतः सिद्ध सूर्य—अपना तेज ही अपना साक्ष्य। वैसे ही अवतारगण।

— 30.04.1924

डेथ (मृत्यु) माने क्या? जब सब की सब favourable conditions (अनुकूल व्यवस्था समूह) वे withdraw (हरण) करके ले जाते हैं, उसका ही नाम है डेथ। इसमें कुछ ज़रा-सा भी horrible (भयंकर) नहीं है।

आहा, वैसा रूप देखने पर पागल हो जाता है। ठाकुर जभी कहते, कभी उन्मादवत्, कभी पिशाचवत्, कभी बालकवत्, कभी जड़वत् हो जाता है— माँ का वही रूप देखकर।

ज्ञानी की अवस्थाएँ जड़वत् क्यों? इसीलिए ना, सब ही देखता है माँ ही करती हैं। तब तो फिर मेरे लिए तो और कुछ भी करने का नहीं, यही सोचकर जड़वत् हो जाता है। सर्वदा आनन्दमय और निश्चिन्त, जभी बालकवत्। वे ही सब होकर रहती हैं, सब ही पवित्र, जभी पिशाचवत्। यह रूप देखकर अन्य रूप अच्छा नहीं लगता, जभी उन्मादवत्।

— 01.05.1924

भक्त जन संसार में किस प्रकार रहेंगे, उसका भी दिग्दर्शन देते हैं। कहते हैं, ठीक-ठीक संसार में निर्लिप्त रहोगे। सब करोगे जब जो प्रयोजनीय, किन्तु व्यर्थ अन्य लोगों की भान्ति इतनी चिन्ता नहीं करोगे। क्यों चिन्ता नहीं करेगा? क्योंकि माँ जानती हैं सब; और माँ सब मंगल करती हैं। तुम्हारा अहंकार है तो कुछ चेष्टा करो। जब फिर चेष्टा भी नहीं

चलती, शरीर-मन में शक्ति नहीं, अर्थ-वित्त लोकजन नहीं, तब उनके ऊपर निर्भर करके बैठे रहो। अब वे सब करेंगी—माँ। वे सर्व मंगलमयी हैं कि ना।

जो लोग साधुसंग करते हैं, समझना होगा उनकी पूर्वजन्म की तपस्या थी। तभी तो साधु का मूल्य समझ सकते हैं। साधु अर्थात् जो दिवानिशि केवल एक ईश्वर को ही लेकर रहने की चेष्टा करते हैं। जैसे एक वकील मुकद्दमा लिए रहता है, डॉक्टर रोगी लेकर रहता है, वैसे ही साधु ईश्वर को लेकर रहता है। जभी साधुसंग पकड़कर रहने से बाकी सब अपने आप आएँगे। जैसे बछड़े को पकड़ कर रखने पर गाय आ जाती है। साधु को पकड़कर रहने से ईश्वर-लाभ होता है।

— 02.05.1924

मन का नाश होने पर ब्रह्मज्ञान होता है। मन का नाश होता है कब? जब वासना जाती है। जब सोलह आना मन ईश्वरमय हो जाता है, तब वासना जाती है। इसको ही कहते हैं मन का नाश, इसका ही नाम है ज्ञान। अब मन में है मेरा घर, मेरा लड़का— सब में मेरा-मेरा। ज्ञान होने पर देखता है, ईश्वर का घर, ईश्वर का लड़का— सब ईश्वर का, सब ही ईश्वर। इसको ही चित्तशुद्धि कहते हैं। मन का नाश, चित्तशुद्धि और ज्ञान एक ही बात है।

— 09.05.1924

ब्रह्मदर्शन क्या इस आँख द्वारा होता है? अथवा इस बुद्धि से होता है? ठाकुर कहते, इस (स्थूल देह) के भीतर और भी देह हैं—सूक्ष्म और कारण देह। इसके परे ब्रह्म। स्थूल के भीतर सूक्ष्म, सूक्ष्म के भीतर कारण, कारण के भीतर महाकारण (ब्रह्म) हैं। कारण-देह को 'भागवती तनु', योग-देह कहते हैं। इसी कारण देह में महाकारण का दर्शन होता है। लेटते, बैठते, निद्रा में, जागरण में, सर्वदा उनके संग में युक्त होकर रहने का अभ्यास करते-करते उसी 'भागवती तनु' का विकास होता है। समस्त जीवन द्वारा ही उनकी उपासना करनी चाहिए, सकल कार्य द्वारा ही उनकी आराधना चाहिए—'तत्कुरुष्व मदर्पणम्।' तभी 'भागवती तनु' का जन्म होता है और उसमें ईश्वर को जाना जाता है।

— 11.05.1924

जतोक्षण निश्वास, ततोक्षण sense-world (बाह्य जगत्) के संग contact (सम्बन्ध)। इसीलिए चक्षु मूँदकर ध्यान करना। चक्षु खोल कर भी ध्यान होता है। किन्तु चक्षु को मूँद लेने पर यहाँ का कुछ भी दिखता नहीं। ईशान मुखुज्ये ने गंगा के किनारे पर घर किया था। कारण, पुरश्चरण करेंगे। सुनकर ठाकुर ने कहा था, यह क्या जी हीन बुद्धि की बात? ईश्वर को पुकारेगा, उसे भी फिर लोग जानें? साइनबोर्ड लगाकर पुकारना सुनकर चिन्तित हो गए। ईश्वर को पुकारना चाहिए निर्जने, गोपने।

— 19.05.1924

जब भले दिन हों, गृहियों को तब provision (संचय) करना चाहिए—provision against rainy days (दुर्दिन-जन्य)। जिनका है अकेला शरीर, संन्यास जीवन है; उनका 'जो हो कपाल में' बोलना चलता है। किन्तु जिनके लड़के-बच्चे हुए हैं, उन्हें अवश्य संचय करना चाहिए। ठाकुर कहते, पक्षी और दरवेश संचय करेंगे नहीं। किन्तु पक्षी के बच्चा होने पर उसको भी संचय करना पड़ता है। अतएव झमेला है गृहस्थाश्रम में। तभी ठाकुर छोकरों से कहा करते, विवाह मत करो। ठाकुर का और भी एक महावाक्य यह है, 'लक्ष्मीछाड़ा होआर चाइते कृपण होआ भालो।' (अपव्ययी होने की अपेक्षा कृपण होना अच्छा।)

गुरु के अधीन होकर सर्व विषय में पारदर्शी होने से शीघ्र हो जाता है। व्यावहारिक विषय में जो मन दक्ष, संस्कृत; इसी मन का ही पीछे ईश्वर में मोड़ फिरा देना। जभी तो कहते, जो नून का हिसाब कर सकता है, वह मिश्री का भी हिसाब कर सकता है। अनलस अतन्द्रित मन का प्रयोजन है।

ठाकुर कहते, मन-मन में पूजा करना और भी अच्छा है। वह पूजा हो सकती है साधन पथ पर थोड़ा अग्रसर होने से। प्रथम है बाह्य पूजा की आवश्यकता। इसमें भी फिर विपद् है, इस बाह्य पूजा में। कर्मकर्त्ता का अभिमान बढ़ सकता है। इसीलिए जो करना, अन्तर में। उनके शरणागत होकर करने से ये दोष नहीं होते।

महामाया सब भुला देती हैं। उनके संग चालाकी चलती नहीं। जभी ठाकुर स्वयं ईश्वरावतार होकर सर्वदा प्रार्थना करते, 'अपनी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध ना करो माँ।' आँखों के सामने देखते थे कि ना, कैसा काण्ड

चलता है अघटन-घटन-पटीयसी महामाया का। जभी लोक-शिक्षा के लिए वह प्रार्थना करते थे।

जो जितना ईश्वर के निकट है वह उतना ही अधिक देख पाता है माया का यह ताज्जुब काण्ड। सब धोखा लगा देती हैं। सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य कहकर बोध करवा देती हैं। कैसे इस मनुष्य की क्षुद्र बुद्धि ठीक रह सकती है? सब उलट-पलट कर देती हैं। जभी सर्वदा शरणागत होकर प्रार्थना करनी सिखा दी थी। गीता में भी वही है—'मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते' (मुझ में शरणागत इस माया-संसार से तर जाते हैं—7:14)। प्रार्थना करने पर माँ प्रसन्न होती हैं। जभी सर्वदा प्रार्थना करने के अतिरिक्त हमारे लिये अन्य उपाय नहीं है।

— 25.05.1924

ठाकुर के शरीर को इतना कष्ट, किन्तु एक सैकेण्ड के लिए भी भूले नहीं ईश्वर को। कितना प्यार होने से ऐसा होता है? ज्योंहि एक बात होती, या गाना होता, जो कोई भी ईश्वरीय विषय चाहे क्यों न हो, झट धप् करके जैसे जल उठता ईश्वरीय भाव। जैसे दियासलाई ज़रा सी रगड़ पाकर ही जल उठती है। तब मन देह में नहीं, ईश्वर में निमग्न! 'माँ माँ' कहकर बाह्यज्ञान शून्य हो जाते।

— 27.05.1924

संकलन : डॉ० नौबतराम भारद्वाज

स्रोत : श्री 'म' दर्शन भाग-4

परमहंस योगानन्द जी की दृष्टि में मास्टर महाशय

[ईश्वरेच्छा से विगत वर्ष में 'योगी कथामृत' के स्वाध्याय का अवसर मिला। मन में हुआ कि इसके नवम प्रकरण में वर्णित 'परमानन्द मग्न भक्त और उनकी ईश्वर के साथ प्रेमलीला' नामक प्रबन्धात्मक संस्मरण में मास्टर महाशय के व्यक्तित्व के अनेक दिव्य एवं आध्यात्मिक पक्ष उजागर हुए हैं। अतः क्यों न उन्हें इस बार के नूपुर में उपलब्ध करवाया जाए। इसी सदिच्छा का सुखद परिणाम है यह वर्तमान लेख। इस लेख के कथानक का कलेवर तो वही है और आधार है वर्ष 1943 में छपी 'एक योगी की आत्मकथा' ही। परन्तु इस विवरणिका में जनसाधारण की बोधगम्यता को ध्यान में अवश्य रखा गया है।]

मास्टर महाशय को परमहंस स्वामी योगानन्द जी पहली बार मिल रहे हैं। मिलन का यह अवसर सम्भवत: स्वामी योगानन्द जी की परमतत्त्व की आन्तरिक खोज का एक आनन्ददायक परिणाम है। वे अत्यन्त श्रद्धा के साथ चुपचाप 'दबे पाँव' 50 नम्बर अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित मास्टर महाशय के छोटे-से कक्ष में प्रवेश करते हैं और तुरन्त महसूस करते हैं कि उनके इस प्रथम आगमन से मास्टर महाशय की 'नैसर्गिक एवं स्वाभाविक अहर्निश पूजा-अर्चना में व्यवधान' डला है और परमशक्ति के साथ उनकी एकात्मता खण्डित हुई है। उनके निर्मिमेष अर्धनिमीलित उभय नयन अनन्त में आकाश-निबद्ध थे और वीरासन में ऊपर उठे हुए उनके दोनों हाथ परस्पर जुड़े हुए थे। सर्वव्यापक उस विराट के साथ एकात्म हुए मास्टर महाशय स्वामीजी के प्रवेश की आहट पा गए थे और उनके मुख से यन्त्रवत् निकला था, 'छोटे महाशय, बैठो। मैं अपनी जगन्माता से वार्त्तालाप कर रहा हूँ।'[1]

---

[1] उल्लिखित ग्रन्थशास्त्र के हिन्दी संस्करण का पृष्ठ 104 द्रष्टव्य। वहाँ उक्त भेंट की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लेखक ने स्वयं कह दी है— 'लम्बे जीने से नीचे उतरते-उतरते अतीत की स्मृतियों से मेरा मन भर आया। 50, अमहर्स्ट स्ट्रीट के इसी घर में, जो

यही देखिए, मास्टर महाशय आगन्तुक स्वामीजी को 'छोटे महाशय' कहकर सम्बोधित करते हैं और अन्तरंग में उन्हें एकात्म भाव से भौतिक आसन भी समकक्ष प्रदान करते हैं क्योंकि वे तो स्वयं उस स्थिति में अहर्निश वास करते हैं :

'यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानम्।'[1]

स्वयं स्वामी योगानन्द जी भी ऐसा ही पाते हैं। वे कहते हैं 'मास्टर महाशय के देवता सदृश रूप ने मुझे चकाचौंध कर दिया। श्वेत रेशम समान दाढ़ी और विशाल तेजस्वी नेत्रों से वे पवित्रता का साक्षात् अवतार लग रहे थे।'[2]

मास्टर महाशय से इस प्रथम साक्षात्कार से कुछ वर्ष पूर्व ही स्वामी योगानन्द जी की माताश्री का देहावसान हो चुका था। उनका वियोग स्वामीजी के लिए असह्य पीड़ादायक था और तब तक के जीवनकाल का इहलोक सम्बन्धी वह सर्वाधिक विधिसम्मत घातक प्रहार था। अतः स्वामीजी विषादग्रस्त थे। विषाद के क्षणों में ही कोई पुण्यात्मा अर्जुनवत् परमानन्द की ओर उन्मुख होता है। वही स्थिति स्वामी योगानन्द जी के जीवनकाल में उस समय अवतरित हुई जब वे मास्टर महाशय के सान्निध्य में पहुँचे थे। उनके स्वागतस्वरूप एकमात्र उक्त वाक्य से 'अतिथि देवो भव' का श्रुतिनिर्देश मानो मूर्त्त हो उठा था। स्वामीजी की माताश्री के सद्यवियोग से उत्पन्न उनकी विरहव्यथा एकदम पराकाष्ठा को प्राप्त हो गई और स्वामीजी का प्रेमविह्वल हृदय जगन्माता से अपनी दूरी को अनुभव करता हुआ क्रन्दन करने लगा। विलाप करते-हुए-से वे अचेतन होकर धरती पर गिर पड़े। फलतः करुणार्द्र मास्टर महाशय का हृदय भी द्रवीभूत

अब मास्टर महाशय का आवास था, किसी समय मेरा परिवार रहा करता था। यहीं मेरी माँ की मृत्यु हुई थी। स्वर्गवासी माता के लिए यहीं पर मेरा मानवी हृदय पीड़ित हुआ था; और यहीं पर आज जगन्माता के विरह में मेरी आत्मा विद्ध हो उठी थी। मेरे शोकविह्वल मन की वेदनाओं और अन्ततः मेरी निरामयता की मौन साक्षी बनीं यही वे पुनीत दीवारें थीं।' — वही, पृ० 105

[1] ईशोपिनिषद् 6

[2] वही पृ० 104 द्रष्टव्य।

हो गया और उनके मुख से अनायास ही फूट पड़ा, 'छोटे महाशय, शान्त हो जाओ।'[1]

मास्टर महाशय के उक्त प्रेमपूर्ण शब्द स्वामीजी को एक 'सन्तप्रवर' के मुख से निःसृत अमृतवर्षा के कणों के समान प्रतीत हुए और उन्हें अपनी अवस्था वैसी ही लगी जैसी कि एक अगाध समुद्र में असहाय छोड़ दिए गए किसी मानव की होती है। ऐसी मरण-मारणी स्थिति में डूबते को तिनके के ही सहारे के प्राप्त होने की तरह ही उन्हें एकमात्र सम्बल दृष्टिगोचर हुआ सम्मुख शोभायमान मास्टर महाशय के रूप में। अतः उन्होंने उनके श्रीचरण बड़ी मजबूती से पकड़ लिए कि कहीं छूट न जाएँ। उन्हें लगा कि जगन्माता तक फरियाद पहुँचाने का उन्हें एक माध्यम मिल गया है और तुरन्त उनके मुँह से निकला, 'महात्मन्, आप मध्यस्थता करें। जगन्माता से पूछिए कि क्या मुझ पर उनकी कृपादृष्टि होगी ?'[2]

ईश्वरोन्मुख हर साधक-तपस्वी की परमतत्त्वान्वेषिणी यात्रा में ऐसे स्थल उपस्थित होते हैं जहाँ पहुँचने पर अरुणिमा-दर्शन से सूर्योदय होने जैसा ही आभास होने लगता है कि उसका ध्येय-इष्ट अतीव निकट है। वे अपनी इस मनःस्थिति को स्वयं यूँ स्पष्ट एवं अभिव्यक्त करते हैं :

"मुझे समस्त शंकाओं से परे विश्वास हो गया था कि मास्टर महाशय वहाँ जगन्माता से घनिष्ठता के साथ वार्त्तालाप कर रहे थे। यह सोचकर मैं अत्यन्त अपमानित अनुभव कर रहा था कि मेरी आँखें जगन्माता को देख नहीं सकती थीं जिन्हें अभी इस समय भी उस सन्त (मास्टर महाशय) की निर्मल दृष्टि (सतत) निहार रही थी। निर्लज्जतापूर्वक उनके पाँव पकड़े हुए और उनके सौम्य विरोध को अनसुना करते हुए मैं बार-बार उनकी मध्यस्थता की कृपा की याचना उनसे करता रहा।"

यह प्रसंग हमें श्री श्री रामकृष्ण कथामृत के उन प्रकरणों एवं विवरणों की याद दिलाता है जहाँ युगावतार भगवान् श्री रामकृष्ण मुहुर्मुहुः

---

[1] वही, पृ० 104
[2] वही, पृ० 104

समाधिस्थ होते हैं और जगन्माता से उनकी एकतरफ़ा बातचीत सभी समवेत भक्तजन सुन पा रहे होते हैं।

श्री श्री ठाकुर तो थे ही विभिन्न समाधि अवस्थाओं की जीवन्त प्रतिमूर्त्ति। उनका क्षणे-क्षणे इहलोक से दिव्यलोक और फिर दिव्यलोक से इहलोक में विचरण चलता ही रहता था। एक शब्द मात्र का श्रवण, एक भंगिमा मात्र का दर्शन, एक शुद्ध सरल हृदय की ऋजु सरल सहज उक्ति ही पर्याप्त होती थी उन्हें समाधि अवस्था में आरूढ़ करने के लिए। समाधि अवस्था की यह स्थिति मास्टर महाशय को भी श्री गुरु महाराज की कृपा से प्राप्त थी। इसे स्वयं श्री श्री ठाकुर ने 'उन्मना समाधि' की संज्ञा दी थी। ऐसा ही स्वामी योगानन्द जी ने उन्हें यहाँ देखा, पाया और महसूस किया। मास्टर महाशय करुणा से द्रवित होकर स्वामी जी को आश्वासन देते हैं कि वे उनकी प्रार्थना माँ जगदम्बा तक पहुँचा देंगे। इस आश्वासन मात्र से स्वामी जी का 'मन विरह-व्याकुलता से तुरन्त मुक्त हो गया।' जो मन अभी क्षणभर पूर्व ही अवसन्न और विषादयुक्त था, सद्यावतार भगवान श्री रामकृष्ण देव के अन्यतम अन्तरंग पार्षद के भरोसे से भरे एक ही वाक्य से आह्लादित होकर प्रफुल्लित हो उठा। इस आनन्दमय वातावरण में स्वामी जी मास्टर महाशय से विदा लेते हैं और शीघ्र ही पुनः मिलने के लिए आने का संकल्प रख जाते हैं— 'महाशय, अपना वचन याद रखिए। माँ का सन्देश पाने के लिए मैं पुनः शीघ्र ही आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।'[1]

श्री 'म' दर्शन के अध्येतागण इस बात से परिचित हैं कि मास्टर महाशय अपने जीवनकाल की अन्तिम दशाब्दी में मॉर्टन स्कूल के चारतल पर अपना निवास रखे हुए थे, यद्यपि उनके परिवार के अन्य सदस्य समीप ही 13/2, गुरुप्रसाद चौधरी लेन में ठाकुरबाड़ी में रहा करते थे। इतिपूर्व 50, अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित स्कूल का यह भवन स्वामी योगानन्द जी के परिवार का भी निवासस्थान था और इसी में स्वामी जी की माताश्री का कुछ वर्ष पूर्व देहावसान हुआ था। दिवंगत माताश्री के इहलोक से प्रयाण

---

[1] वही, पृ० 105

की स्मृतियों ने स्वामीजी की माँ जगदम्बा के दर्शन की व्याकुलता को चरम सीमा पर पहुँचा दिया था।

घर पहुँचते ही अपनी ध्यानकुटीर में ध्यानस्थ हुए स्वामी जी को एक अतीव अद्भुत दर्शन हुआ। वे देखते हैं कि ग्रीष्म ऋतु की उस मध्यरात्रि में रात्रि का अन्धकार एकदम अचानक विदूरित हो गया है और चारों ओर एक दिव्य आभा की छटा छा गई है! उस अलौकिक तेजोमय प्रकाशपुञ्ज में माँ जगदम्बा परमसौन्दर्य का मूर्त्त विग्रह लिए हुए अपने स्मितकारी मुखारविन्द से स्वामी योगानन्दजी से कह रही हैं, 'सदा ही मैंने तुम्हें प्रेम किया है!'[1] उनके इस दिव्य स्वर के अनन्त में लीन होने के साथ-साथ ही वह प्रेममयी, परमकल्याणमयी तेजोमयी मूर्त्ति भी अन्तर्हित हो गई; ऐसा स्वयं स्वामी योगानन्द जी अनुभव करते हैं।

इस परमानुभूति के फलस्वरूप स्वामी जी मास्टर महाशय के दर्शनार्थ मॉर्टन स्कूल के लिए तुरन्त चल पड़े। अरुणोदय के साथ ही वे अमहर्स्ट स्ट्रीट पहुँच गए। स्कूल के चारतले पर अवस्थित मास्टर महाशय के आवासस्थान पर जाकर उन्होंने देखा कि द्वार अर्गलबद्ध है। दरवाज़े की साँकल पर लगा श्वेत वस्त्र कह रहा है कि पूर्ण एकान्त को किसी भी तरह से डिस्टर्ब न किया जाए। परन्तु आश्चर्य, महदाश्चर्य! मास्टर महाशय दरवाज़ा खोलकर सामने दण्डायमान हो गए! गद्‌गद् हुए स्वामीजी सम्मुख शोभायमान उस महापुरुष के श्रीचरणों में श्रद्धावनत होकर प्रणाम करने लगे। युगावतार के अंतरंग पार्षद उस अन्तर्यामी मास्टर महाशय के मुँह से निकला, "माँ जगदम्बा जब स्वयं प्रकट होकर तुम्हें जो कह गईं, उसके बाद मेरे पास कुछ कहने-सुनने को रहा ही क्या है।"

आहा! स्वामीजी विश्वस्त हो गए कि हृदयग्रन्थी के भेदन के लिए और सभी संशयों को छिन्न करने के लिए सक्षम महापुरुष तो समक्ष अवस्थित हैं! वे अविलम्ब तत्क्षण ही उस महापुरुष के श्रीचरणों में साष्टांग प्रणाम कर बैठे और 'तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' में वर्णित प्रथम सूत्र से प्रणिपात द्वारा ही उस परमतत्त्व को जानने के लिए व्यग्र हो उठे;

---

[1] वही पृ० 106

अलौकिक हर्ष-जन्य अश्रुधारा उनके दोनों चक्षुओं से बह निकली! महापुरुष त्रिकालदर्शी होते हैं, क्योंकि 'यत्र तु सर्वमात्मैवाभूत' की उनकी स्थिति होती है। अतः मास्टर महाशय के मुख से अनायास ही निकला :

"क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारी भक्ति ने माता की अनन्त करुणा को नहीं छुआ है ? ईश्वर का मातृभाव, जिसे तुमने मानवी और दैवी रूपों में पूजा है, तुम्हारी आर्त्त पुकार का उत्तर दिए बिना कदापि नहीं रह सकता।..... मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ, तुम्हारे गुरु थोड़े समय बाद आएँगे।"[1]

इसके उपरान्त स्वामी योगानन्द निम्नभावे गहन विचार-श्रृंखला में उतर गए, डूब गए :

"ये सीधे-सादे सन्त कौन थे, जिनका परमात्मा से किया गया छोटे से छोटा अनुरोध भी मधुर स्वीकृति पा जाता था? इस संसार के जीवन में उनकी भूमिका अत्यन्त साधारण थी, जो मेरी दृष्टि में विनम्रता के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के अनुरूप थी। अमहर्स्ट स्ट्रीट के इस घर में मास्टर महाशय लड़कों के लिए एक छोट-सा हाई स्कूल चलाते थे। उनके मुँह से कभी डाँट-फटकार का कोई शब्द नहीं निकलता था। उनका अनुशासन किसी नियम या छड़ी की वजह से नहीं था।"

"अगम्य प्रतीत होने वाले नीरस उपदेशों की अपेक्षा आध्यात्मिक संसर्ग के द्वारा ही वे अपने ज्ञान का प्रसार करते थे। जगज्जननी के विशुद्ध प्रेम में वे इतने चूर रहते थे कि मान-अपमान की बाह्य औपचारिकताओं की ओर उनका कोई ध्यान ही नहीं रहता था।"[2]

अब तो स्वामी जी मास्टर महाशय के दो बार के कुछ घण्टों के सान्निध्य-लाभ से इतने अभिभूत हुए कि प्रतिदिन पूर्वाह्न में ही उनके अमहर्स्ट स्ट्रीट निवास पर पहुँच जाते। 'मुझे मास्टर महाशय के उस दिव्य चषक की चाह रहती थी जो इतना लबालब भरा हुआ था कि उसकी बूँदें प्रतिदिन मेरे ऊपर छलकती थीं। पहले कभी भी इतने भक्तिभाव से मैं नतमस्तक नहीं हुआ था; अब तो मास्टर महाशय के चरणस्पर्श से पुनीत

---

[1] वही पृ० 107
[2] वही पृष्ठ 107

हुई भूमि पर केवल चलने का अवसर मिलने को भी मैं अपना सौभाग्य मानने लगा।'[1] इसी प्रसंग में स्वामी जी आगे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि मास्टर महाशय के विशाल स्वभाव में कहीं तनिक भी जगह नहीं थी कि अहंकार अपना पग जमा सके।

एक बार स्वामी जी अतीव श्रद्धापूर्वक स्वयं अपने हाथों से चम्पक पुष्पों की एक माला गूँथकर मास्टर महाशय के लिए ले गए। उस दिन वे इतने आनन्दित हुए कि अगले दिन स्वामी जी को संग लेकर पुण्य श्री दक्षिणेश्वर धाम जाने को उद्यत हो गए। परिणामतः वे दोनों अगले दिन कलकत्ते से नाव द्वारा दक्षिणेश्वर गए। मन्दिर-दर्शन के समय हुए आनन्दोद्रेक का वर्णन स्वयं स्वामीजी ने इस प्रकार किया है :

'मास्टर महाशय आनन्द से प्रफुल्लित हो उठे। वे अपनी प्रियतम माँ के साथ अथक प्रेमलीला में मग्न थे। जैसे-जैसे वे माँ का नाम जपते जा रहे थे, मेरा आनन्दित मन मानो उस सहस्रदल कमल की तरह ही सहस्रधाराओं में फूट पड़ रहा था।"[2]

'इस संत के साथ की हुई दक्षिणेश्वर की अनेक तीर्थयात्राओं में यह प्रथम थी। मास्टर महाशय से ही मैंने ईश्वर के मातृत्वपक्ष या ईश्वरीय करुणा के माधुर्य को जाना। उस शिशु सरल सन्त को ईश्वर के पितृत्व पक्ष या ईश्वरीय न्याय में कोई रुचि नहीं थी। कठोर, सटीक, गणितीय निर्णय की कल्पना ही उनके कोमल स्वभाव के विपरीत थी।'[3]

श्री दक्षिणेश्वर की पुण्यस्थली में स्वामीजी के साथ टहलते-टहलते मास्टर महाशय झाऊ वृक्षों के एक झुण्ड के पास आकर रुक गए। वृक्षों पर गुलाबी रंग के 'परदार' पुष्प उस दिन कुछ अधिक ही खिले हुए थे। स्वामी जी ने महसूस किया कि मास्टर महाशय का अजपा-जप निरन्तर चल रहा था। वे स्वयं भी हरी-हरी घास पर आसन लगाकर ध्यानस्थ हो गए और दिव्य लोकों में विचरण करते रहे।

---

[1] वही पृष्ठ 108
[2] वही पृष्ठ 108
[3] वही पृष्ठ 109

स्वामी जी के साथ वार्त्तालाप-प्रसंगों में मास्टर महाशय यह कहकर बात शुरु करते थे कि मेरे गुरुदेव ने मुझे यही बताया था। 'अपने हर उपदेश को किसी प्रकार के आग्रह या अधिकार वाणी के बिना इसी श्रद्धा-पूरित वाक्य के साथ वे समाप्त करते थे। श्री रामकृष्ण के साथ मास्टर महाशय की एकात्मता इतनी गहरी हो गई थी कि अपने किसी भी विचार को अब वे अपना विचार नहीं मानते थे।'[1]

श्री दक्षिणेश्वर की उस पुण्यभूमि में मास्टर महाशय के साथ विचरण करते हुए स्वामी जी ने अनेक बार उनके दिव्य स्पर्श को पाया और उस अलौकिक स्पर्श मात्र से माँ जगदम्बा के सामीप्य में स्वयं को अनुभव किया। वे बताते हैं, 'उन्होंने स्नेहपूर्वक एक हाथ से मुझे अपने अङ्क में भर लिया; उनके जादू के गलीचे पर सवार होकर मैं तुरन्त जगज्जनी के दयामयी सान्निध्य में पहुँच गया।'[2]

अन्ततोगत्वा वे मास्टर महाशय के साथ घटे अपने क्रिया कलापों, वार्त्तालापों और घटनाक्रमों के विवरण का इस प्रकार उपसंहार करते हैं :

'मास्टर महाशय एवं अन्य सभी सन्तों की विनम्रता इस बोध से उपजती है कि वे पूर्णतः उस ईश्वर पर निर्भर हैं जो एकमात्र जीविताधार और एकमात्र विधाता हैं। चूँकि ईश्वर का स्वरूप ही आनन्द है, अतः ईश्वर के साथ तादात्म्य होने वाला या उसमें मग्न होने वाला मनुष्य सहज ही असीम आनन्द को अनुभव करता है।'

'सभी युगों के सन्तों ने शिशुसुलभ भाव से जगन्माता को प्राप्त किया और उन सभी ने कहा कि उन्होंने सदा ही जगन्माता को उनके साथ खेलते पाया। मास्टर महाशय के जीवन में महत्त्वपूर्ण और महत्त्वहीन अवसरों पर भी इस दिव्य खेल की अभिव्यक्तियाँ स्पष्ट हुईं।'[3]

— डॉ० नौबत राम भारद्वाज

---

[1] वही, पृष्ठ 109
[2] वही, पृष्ठ 110
[3] वही, पृष्ठ 114

अपनी भाषा का महत्त्व— मास्टर महाशय

[पहली मई, 2022 (रविवार) के अंग्रेज़ी ट्रिब्यून में छपी खबर के अनुसार हमारे प्रधानमन्त्री मोदी जी ने कहा : आज भी हमारे देश में सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट में काम अंग्रेज़ी भाषा में हो रहा है जबकि देश की अधिकांश जनसंख्या के लिए अंग्रेज़ी में हुई न्यायिक प्रक्रिया को समझना कठिन है। अत: हमें न्यायालयों का कार्य अपनी प्रान्तीय भाषाओं में करना चाहिए। इससे न्याय-प्रणाली में लोगों का विश्वास बढ़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीकी और मेडिकल शिक्षा भी बच्चों की अपनी भाषा में उन्हें उपलब्ध करवाई जानी चाहिए।[1] ....

---

[1] Pitching for the use of local languages in courts, PM Narendra Modi today said it would enhance people's faith in the judicial system and ensure social justice.

"Even today, the proceedings of the Supreme Court and high courts in our country are conducted in English. For a large section of the population, it's difficult to understand the judicial proceedings and the judgements. We need to promote local languages in courts as it will enhance people's faith in the judicial system and they will feel connected with it." the PM said. Addressing the 39th Joint Conference of Chief Ministers and Chief Justices Modi ji wondered why technical and medical education was not available in the mother tongue of students.

"Our children who go abroad learn the languages of their host country and then complete their medical education. We can do that here, he said at the conference....".

The PM appreciated efforts of some state governments for having taken initiatives to offer technical and medical education in local languages. He said a group was looking into making laws in two formats— one in legal languages

विदेश में जाकर पढ़ने वाले हमारे बच्चे पहले उस देश की भाषा सीखते हैं और फिर उस भाषा में मेडिकल आदि की पढ़ाई करते हैं। हम भारत में भी वैसा ही कर सकते हैं। हर्ष की बात है कि कुछ राज्य सरकारें इस ओर प्रयत्नशील भी हैं।

आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व मास्टर महाशय (श्री म) भी इसी बात के पक्षधर हैं कि बच्चों की शिक्षा उनकी अपनी भाषा में ही दी जानी चाहिए।]

श्री म ने अपने स्कूल में कुछ दिन से बंगला में सभी विषय पढ़ाने आरम्भ किए हैं। उन्होंने अपनी परिपत्रों की पुस्तिका में शिक्षा पर सुचिन्तित एवं अनुभवयुक्त विचार दिए हैं। बड़े हैडमास्टर हरिपद इन्हें पढ़कर सुना रहे हैं :

शिक्षा के दो ही उद्देश्य हैं। प्रथम चरित्र संगठन, और द्वितीय विश्वविद्यालय की परीक्षा पास करना। अंग्रेज़ी पढ़ाने से पहले बंगला (प्रान्तीय भाषा) में कहानी अथवा कविता का भाव बता देना चाहिए; और बीच में दो-एक लड़कों से जिज्ञासा करनी चाहिए। इतिहास पढ़ाते समय मैप दिखाने चाहिएँ, भूगोल में तो दिखाना ही होगा। साहित्य में भी वैसे ही दिखाना चाहिए। इससे छात्रों को अधिक स्मरण रहेगा, अथच बोझ नहीं पड़ेगा। History is philosophy taught by example (श्रेष्ठ पुरुषों की जीवनी के माध्यम से दर्शनशास्त्र की शिक्षा का नाम ही इतिहास है।) हिस्ट्री का moral (उपदेश) बोल देना चाहिए। Poetry (कविता) मुखस्थ करवानी चाहिए। टोनी साहेब आश्चर्यान्वित हो जाया करते और कहा करते, यह किस प्रकार poetry (कविता) पढ़ी जाती है?— किन्तु मुखस्थ नहीं की जाती। अंग्रेज़ी, बंगला, संस्कृत— सब की poetry (कविता) मुखस्थ करवानी चाहिए।

प्रान्तीय भाषा का महत्त्व

---

and the other in simple language that can be understood by the common man.

दोनों ही तो हैं— एक तो शब्दार्थ, और एक मर्मार्थ— language and thought. हम thought (मर्मार्थ) देने की चेष्टा करते हैं। इसी के लिए जितनी ही language (भाषा) प्रयोजनीय हो, सिखाइए।

जापान में vernacular (मातृभाषा) में समस्त सिखाया जाता है। इससे thought clear (भावधारा विशुद्ध) होता है। यहाँ तक कि साइन्स एवं फिलोसफी तक जापान में मातृभाषा में पढ़ाई जाती हैं। अंग्रेज़ी वहाँ पर optional (स्वेच्छामूलक) है।

—डॉ० (श्रीमती) निर्मल मित्तल

स्रोत : श्री म दर्शन भाग-8, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 251-252

स्वामी नित्यात्मानन्द

(1893-1975)

- जन्म का नाम : जगबन्धु राय।
- जन्म : गंगा दशहरा, सन् 1893 (मामा श्री भैरवराय और श्री गोबिन्दराय के घर)
- स्थान : पूर्वी बंगाल (बंगला देश) के मैमनसिंह जिले का कोठियादि नाम का कस्बा
- शिक्षा : लॉ तक। लॉ करते-करते श्री म के पास जाने लगे। श्री म कथित ठाकुर की बातें डायरी में लिखने लगे।
- दीक्षा : स्वामी शिवानन्द (महापुरुष महाराज) जी से दीक्षित।
- ऋषिकेश-वास : सन् 1938 से ऋषिकेश में वास और 'श्री म दर्शन महाग्रन्थ- माला का लेखन और प्रैस कॉपी की तैयारी।
- सन् 1958 में श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता से भेंट। शेष जीवन प्राय: उन्हीं के वास स्थान को निज आश्रम बनाए रखा। उनकी-सेवा सहायता से श्री म दर्शन का मुद्रण-प्रकाशन आरम्भ।रोहतक में सन् 1967 में श्री म ट्रस्ट की स्थापना।
- महासमाधि : 12 जुलाई, सन् 1975 को # 579/18-बी, चण्डीगढ़ में।

●

Letters of Swami Nityatmananda

[ठाकुर जी कहते— भक्तों के पत्र हैं पुराण। श्री म दर्शन के रचयिता स्वामी नित्यात्मानन्द देश-विदेश में रह रहे अपने शिष्यों को पत्रों के माध्यम से अनेक जानकारी दिया/लिया करते। इन पत्रों में इस जानकारी के साथ-साथ रहतीं ठाकुर जी, उनके शिष्यों की बातें, उनके उपदेश जिनके माध्यम से वे भक्तों का मार्गदर्शन करते हुए उनके मन को ऊपर उठा देते और उनमें नवीन आशा का संचार करते। प्रस्तुत है उनके कुछ पत्र :]

(1)

C/o Smt. Sahu Paramkirti Saran Kothiwala,
Moradabad.
21.10.61

My dear Manno[1] ji,

Thanks for your parcel of *prasads*. By Thakur's grace the marriage ceremony was over in a magnificent way. Thank Him for this. Now you are relieved of the marriage worries. Now you must take complete rest, and give yourself entirely to the divine contemplations. I am very glad to see that Thakur has endowed you with the most precious divine virtue— dispassion or *vairagya*. Your beloved daughter was married and yet you are not overpowered by the parental affection only like ordinary women. You surrendered the entire ceremony to Thakur and He has done it through his different agents in the shape of friends and relatives.

---

[1] Smt. Ishwar Devi Gupta's childhoold name.

I am also very glad to learn that you are completely alright.

One thing you all forget to inform me for which I was anxious. That is Baby's[1] passing the M.A. exam. I wrote you once. But no mention of that. Neither Baby thought it worth while to inform me. But when she was with her exams, she wrote letters so often. Hoshiarpur invitation card only showed me that she passed her M.A. This is the way of a *sakam bhakta*. In *sakam bhakti* there is no love for lasting peace and happiness.

Vijaya[2] greetings to you all.

Affectionately,

Nityatmananda.

(2)

C/o Sh. H.S.B. Sanyal
Chomu Bagh,
Sardar Patel Marg,
Jaipur.

My dear Manno ji,

Thanks for your two cards. I got a letter from Urmi also. I think you are again engaged in another marriage. I am quite at peace to learn that you are quite in normal health.

I hope, by now the 1st form of श्री म दर्शन is in print. Regarding the money which you intend to contribute, I advise you to keep it with you until I go to Chandigarh in early December.

---

[1] Smt. Gupta's daughter Urmi.
[2] Vijayadashmi.

In Delhi I have to satisfy Prem[1] and Ananda[2] who are both so eager to have me. Here I gave two small talks to Anand. It seemed he liked them. He told me he may drop me at Chandigarh.

Then Principal and Mrs. Sanyal's request is also there to stay with them.

Another old friend Mr. T.R. Ahuja is also very eager to have me with him for a week at least. These requests cannot be fulfilled in less than two weeks in the least. I am very short of time this time. Because I want to return to Rishikesh one month earlier, that is, by the middle of February to avoid rush of Purna Kumbha at Hardwar.

Prem & Anand attended me at the station on the 23rd and took me to their house for 2 hours. Anand came here on the 26th. One day he had dinner with us.

On the 7th November, I may go to Udaipur and Nathadwara for 3 days in a car and return here on the 10th. Enroute see Pushkar & Ajmer. I also go to Khetri for a day— where Swami Vivekananda stayed for a year during his wandering days.

With love & blessings to you all— to Gupta ji, Kamal[3] & Mira & Veena[4] & her children. Here it is cooler now.

Affectionately,

Nityatmananda

---

[1] Smt. Gupta's elder daughter.
[2] Prem's husband.
[3] Smt. Gupta's son.
[4] Smt. Gupta's daughters.

(3)

C/o Prof. D.P. Gupta,
Civil Road, Rohtak.
25.04.65

My dear Lala ji,

God is all good weather. He places us in difficulties or plenties, whether He kicks or kisses.

Today you are alone having lost your companion in the boat of world's life— a faithful companion for half a century.

We men are helpless instruments of God in this world. We are united by *karma* and divided & separated by the same *karma*.

I am visualising many acts of Bibiji, the departed soul, during the last quarter century. I believe her soul will receive the grace and blessings of Thakur, the God incarnate, because she loved and served His servant for this quarter century.

May you be comported with the children!

Ever yours in the Lord,

Swamiji.

Lala Durga Dass,
Advocate, Hoshiarpur (Pb.)

(4)

C/o Prof. D.P. Gupta
Civil Road, Rohtak.
03.05.65

My dear Lala ji,

Thakur bless Bibiji, bless you all.

Lord Krishna said to Arjuna, 'You mourn for those who are not to be mourned for, and yet

mutter the words of wisdom. But the men of wisdom never grieve at the departed and the not departed.[1]

Again he said, The Real Self is never born, nor dies, never was, nor will be. It is ever unborn, eternal, and not destroyed when the body is destroyed.[2]"

Lord Christ said, "Who-soever will give a cup of water to any of my children will give it to Me. And he who gives it to me, gives it to my Father : for I and my Father are one.

Bibiji served an humble child of Thakur for about a quarter of a century. So it was a service to Thakur Himself. So, the reward is grand; the joy everlasting.

Ever yours in the Lord,

Swamiji.

Lala Durga Dass,
Advocate, Hoshiarpur (Pb.)

---

1 अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे,
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिता: (गीता 2:11)

2 न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूय:।
अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥ (गीता 2:20)

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता (1915 – 2002)

- माँ सारदा के जन्मोत्सव पर सन् 1958 की प्रथम भेंट से ही स्वामी नित्यात्मानन्द जी की अन्तरंग शिष्या एवं उनके पश्चात् श्री म ट्रस्ट की आजीवन अध्यक्षा।
- स्वामीजी द्वारा रचित बंगला 'श्री म दर्शन' ग्रन्थमाला का प्रकाशन और उसका हिन्दी-अनुवाद तथा प्रकाशन।
- बंगला कथामृत का हिन्दी-अनुवाद तथा प्रकाशन।
- इनके पति प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा
    - — हिन्दी 'श्री म दर्शन' का M., 'the Apostle and the Evengelist' नाम से तथा
    - — हिन्दी कथामृत का 'Kathamrita' नाम से ही अंग्रेज़ी-अनुवाद और प्रकाशन।

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता द्वारा स्वामी नित्यात्मानन्द जी (जगबन्धु महाराज) को लिखे कुछेक पत्र

[श्री म ट्रस्ट की द्वितीय अध्यक्ष श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता ने अपने गुरु स्वामी नित्यात्मानन्द जी का संग-लाभ किया लगभग सुदीर्घ 16 वर्षों (1958-1975) तक। लौकिक/आध्यात्मिक— सभी प्रकार का ज्ञान देने के साथ-साथ स्वामी जी ने अपनी शिष्या श्रीमती गुप्ता को दैनन्दिन जीवन कैसे जिया जाए, इसकी शिक्षा भी दी। श्रीमती गुप्ता को इन प्रस्तुत पत्रों में स्वामी जी की यह समस्त शिक्षा परिलक्षित होती हैं।]

(1)

श्री श्रीरामकृष्ण: शरणम्

III/J, 42, Lajpat Nagar,
New Delhi-24
27.01.71

परम पूजनीय श्रद्धेय प्रिय ठाकुर माँ,

प्यार से चरणों में सश्रद्ध वन्दना— कल का गणतन्त्र का कार्यक्रम प्रेम[1] के यहाँ 23 इंच के बड़े television पर देखा। देश के हालातों का तस्वीरों में सुन्दर रूप से दर्शन हुआ। किन्तु वास्तविकता भी देख रहे हैं।

प्रेम, बिल्लु[2] खुश हैं। मैं 24 को यहाँ शाम को आ गई थी। उस दिन इतवार को मनीश के 12 दिन के बेटे का नामकरण संस्कार आदि था। सो सब जमा हुए थे। प्रेम और बच्चे भी गए थे।

---

[1] श्रीमती गुप्ता की बेटी

[2] आनन्द, प्रेम के पति

आते समय मैं, प्रेम, बच्चे सब (रामकृष्ण मिशन) आश्रम में गए। ठाकुर को प्रणाम करके तथा दो-तीन साधु-दर्शन करके जल्दी घर आ गए। स्वामी वन्दनानन्द जी नहीं मिले, वे ऊपर hall में थे।

आज फिर रोहतक रोड जाते हुए आश्रम जाने का विचार था। किन्तु गई ही नहीं। गला, खाँसी, सर्दी है। यहाँ पर तीन दिन से बादल, कुछ-कुछ वर्षा, सर्दी काफ़ी थी। सो प्रेम ने कहा, कल चण्डीगढ़ जाओगी; फिर 10 को इन्द्र के काम और प्रैस के काम के लिए लौटोगी। इससे थकावट बहुत हो जाएगी। अभी भी गला, सर्दी, खाँसी है, वह बढ़ जाएगी। फिर मैंने सोचा यदि ना ही आ सकी लौटकर तो! सो आज प्रेम चण्डीगढ़ फोन कर देगी और मैं पत्र भी लिख रही हूँ कि मैं 15-16 फरवरी को चण्डीगढ़ आऊँगी। यदि कोई ऐसा ही काम हुआ जो जाए बिना नहीं हो सकेगा तो मैं चली जाऊँगी।

पूज्य स्वामी जी, पुस्तकें (श्री म दर्शन-II, हिन्दी) आपको मिली होंगी। आज मैंने अरुण राय को फोन किया था। 23 को मिली भी थी। मैंने कहा था, हम एक हज़ार और नई छपवाना चाहते हैं। इन 1200 पुस्तकों की जिल्दें न बाँधें। सस्ती कागज़ की बँधवाने से 800 रुपए बच जाएँगे। और आज उसने कहा, अच्छे बढ़िया कागज़ पर एक हजार मैं दुबारा छाप दूँगा और इस त्रुटि के लिए 1500 रुपए छपवाई में कम लूँगा। इस प्रकार हम पहली वाली पुस्तकों का उसे 4700 रुपए देंगे और नई पुस्तकों का प्राय: 3500 रुपए for one thousand new better books. Total 8200 रुपए में एक हजार बढ़िया printed books + 1500 पुरानी books हमें मिलेंगी। प्रश्न उठता है क्या करेंगे?

सो मैं इन्द्र को भी लिख रही हूँ कि ये पुस्तकें बाहर भेजने या बड़े-बड़े ग्राहकों को देने में कैसी लग रही हैं?

1. मुझे लगता है इस printing से हमारे ट्रस्ट का कोई भी विश्वास नहीं करेगा। कहेंगे, ये तो बहुत रद्दी काम करवाने लग गए अभी से। आगे दान की आशा कम हो जाएगी। इन्द्र की भी बदनामी न हो।
2. भारत के बाहर तो जा ही नहीं सकेंगी ये।

3. तीन-चार तरह का कागज़ एक ही पुस्तक में बहुत ही shabby लग रहा है।

4. अच्छी छपाई, अच्छी binding get up, अच्छा कागज़, कीमत कम— कुछ भी तो हम इसमें निभा नहीं रहे। — श्री म की वाणी कथामृत छपवाने के समय की।

2700/- रुपए अधिक लगाने से हमें एक हज़ार उत्तम नई books मिल जाएँगी। वे हम बाहर तथा इन्द्र और हम अपने बड़े contributors को दे सकेंगे। और पहली 1300 पुस्तकें कुछ सस्ते दामों पर, या वैसे ही भक्तों में, आश्रमों में प्रचार के लिए भेज देंगे या सब बैठकर सोच लेंगे कि क्या किया जाए।

दिलीप, दालमिया, इन्द्र, आपको तथा पाँच-सात जनों को पुस्तकें चली गई हैं। देखूँ, क्या उत्तर आता है उनका। वैसे मैंने अभी किसी को भी उनके विचार के लिए लिखा नहीं है। आज अरुण कह रहा था, प्रथम पुस्तक के 2-3 फर्मे यदि दुबारा छाप दिए जाएँ तो कैसा रहेगा। मैंने कहा कि कागज़ जो रंग-रंग का लग गया है, वह तो धब्बा लगा ही रहेगा। फिर jacket भी sepia नहीं की आपने। बाहर तो तब भी ये जाने में बुरी ही लगेंगी। शर्म आती है। फरवरी 10 को इन्द्र आ रहा है। इससे पहले यदि आपकी, पापा की, दिलीप की और अभय भाई की राय पता लग जाती तो तब प्रैस वाले से कुछ आसानी से बातें हो सकती हैं। मैंने कह दिया है, 'हमारे ट्रस्टी ही इन बातों का निर्णय करेंगे। मैं और इन्द्र अकेले कुछ भी नहीं कह सकते।'

23 को मेरे साथ पद्मा[1] गई थी। और दुबारा छपवाने और अरुण से छपवाई की compensation लेने के मेरे विचार को उसने पसन्द किया था। आज की 1500 रुपए की छूट की बात पद्मा को अभी नहीं बताई। वह कल आएगी तो कहूँगी।

---

[1] स्वामी जी की शिष्या

मैं राज वर्मा को नहीं मिली। फोन किया था। फिर मैं इधर आ गई हूँ। Mrs. बगाई, 37-J वाली कृष्णा शर्मा (young lady जहाँ आपको भीतर से आकर्षण हुआ था 66 में), प्रेम, पद्मा, धन्नो, राज, छवि, नीना का प्रणाम, वन्दना। छवि के घर के लिए कुलवन्त भाई को कहा है। Sri S.K. Chaudhury उसे मिलेंगे और अपनी position detail में देंगे। बगाई का लड़का मार्च में आएगा। वह जन्म-पत्री मिलाने का ख्याल कर रही है। आशा है अब आपका पैर ठीक ही होगा। ठाकुर-माँ की लीला को मैं क्या समझूँ? वे मेरे लिए उत्तम लिए बैठे हैं, इसी विश्वास पर चल रही हूँ। और वे प्रार्थना सुनते हैं, यही देख रही हूँ। आन्तरिक प्रार्थना होती रहे, यही भिक्षा माँगती हूँ।

Mr. Wadhwa ने ₹500/- का चैक चण्डीगढ़ भेजा है। गुप्ता जी रसीद भेज देंगे।

जगदीश को प्रणाम— वह सेवा करने का प्रसाद भी पा रहा है।

आपकी,

मन्नो

(2)

Bombay,
1.4.1971.

Dear Madam,

Swami Deshikananda ji who has retired from active work after being the President of Sri Ramakrishan Ashram of Ooty & Salem is now an inmate at the Sri Rama Krishna Ashram, Khar, Bombay-52 (AS) here. He desires to contact Swami Nityatmananda ji whom he knows as Sri Jagabandhu Maharaj & an intimate associate and disciple of the Great Master Mahashya. He will greately appreciate if you can kindly write to Swami Deshikananda ji,

the address where he could contact Swami Nityamananda ji. Swami ji has some beautiful remembrances of Master Mahasaya whom he met for over 10 days at Sri Puri Jagannath and again at Calcuttta way back in 1925 and he desires to pass it on to this jealous devotee of Sri M. for his information and use as he thinks it best.

Kindly write to Swami Deshikananda ji to the address marked above at your earliest and oblige.

Thanking you,

Yours sincerely,

Sd/-
N.S.V. Rao,
Bombay-19 (DD)

(3)

श्री श्रीरामकृष्णः शरणम्

65/9, Rohtak Road,
New Delhi-5.
10.02.71

Rev. Thakur-Ma Dear,

Charan vandana with love.

I got your letter of 9.2.71 just now. I am going to Dr. I. Sanghi. He has come here today morning from Bangalore.

Guptaji's letter I also got just now and an invitation of Dear Dr. Sanghi for his son's marriage on 14th & 16th reception, dinner.

Yes, I am trying to send the Jacket pricture's block of M. & the colour's sample of Bengali VIIth or other parts, whichever Dr. I. Sanghi and other bhaktas will advise me.

I am also giving instructions to Sri Ashok Mitra and Mr. Dey for (1) paper (2) printing (3) binding & (4) general get up.

I hope Guptaji has given instructions to Maya Press (1) about the point of the types (2) quality and kind of the paper. Again I shall give instructions for the above. Guptaji has also written them to send us the file copy of every forms of both the Hindi & English books.

Yes, I also feel all our books should be in bright white paper.

Today I shall settle with I.M.H. Press with the help of Indra. We are going there. First of all I shall go to him at 68, Daryaganj, then he will accompany me to I.M.H. Press.

Yes, everytime I went to Arun I always prayed to Thakur to get me the *shakti* to ask in a way that we can get larger compensation and Arun does not feel that he is doing a bad bargain but at the same time he should feel that he has done a bad job. He is very sorry for this bad job.

Today I received a letter of Vijaya also. They must have shifted their house to Session House on the 9th.

Mr. Kailash & Kishi have sent ₹500/- for the Trust to Guptaji.

Yes, I have received your card at Padma's address. She brought it herself. She is happy to read it & wants to follow the instruction. Today she was to go with me to Indra for I.M.H. Press but her friend (brother) Mr. Krishan Chand Kanda fell from the scooter and got some injuries. She went to him to Kalkaji. Mr. Kanda has given first and second parts of M. the Apostles to his library— S. Bhagat Singh College Library. He is conscious though lying in the bed. Dear brother Suresh

is really a Johary जौहरी. He understood you as a real child of Thakur – so you are making a *jeeva* into a *shiva*. A real transformtion. I had written a letter to Swami ji and to Ardhendu ji. I hope you have got a letter of Mr. Ranjeet. He also got some injuries in his foot and he is availing the opportunity in reading Sri Ma Darshan, good thing.

I may go to Chandigarh on the 17th or earlier. Guddi is anxious that I should go there soon, papa writes.

Papa is busy with the work of Trust & is happy.

Dhannoji, Kamala all send their Pranams. Padma ji's & mine charan vandana.

Abhaya's letter I also got here. I am trying to find a place for his son. I shall ask Padma.

Yours own

Manno

Collection : Dr. Naubat Ram Bharadwaj

योगी-चक्षु

श्री रामकृष्ण (मणि के प्रति)— योगी का मन सर्वदा ही ईश्वर में रहता है, सर्वदा ही आत्मस्थ। चक्षु अर्धनिमीलित, देखते ही पता चल जाता है। जैसे पक्षी अण्डे सेता है— सारे का सारा मन उसी अण्डे की ओर। ऊपर नाममात्र को देख रहा है।

-'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' तीसरा भाग, दूसरा खण्ड, पहला परिच्छेद।
24 अगस्त 1882

अंजलि

[रामकृष्ण मठ एवं मिशन के चौथे प्रेज़िडेण्ट श्रीमत् स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज (हरिप्रसन्न महाराज) के जन्मशती के उपलक्ष्य में 1968 में पूज्यपाद स्वामी नित्यात्मानन्द (जगबन्धु महाराज) जी द्वारा बंगला में लिखित यह श्रद्धाञ्जलि प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत है इस लेख का हिन्दी अनुवाद।]

(1)

जिन्हें ब्रह्म-साक्षात्कार हो गया है, वे ही तो हैं महापुरुष। इस रूप में एकजन महापुरुष के सम्बन्ध में कुछ कहने या लिखने का अधिकार या तो उन्हें स्वयं को होता है अथवा अन्य एकजन महापुरुष को हो सकता है। जिन्हें इस रूप में ब्रह्मज्ञान-लाभ हुआ नहीं, वे कैसे एक महापुरुष का 'वज़न' कर सकते हैं? उनके काँटे पर स्वयं वज़न करने पर तो वज़न कम पड़ जाएगा। वह तो बैंगनवाले द्वारा हीरे के मूल्य निर्धारण का प्रयास ही हो जाएगा। केवल बुद्धि के तुला-यन्त्र से ब्रह्मज्ञान तोला नहीं जाता। यह वस्तु तो बुद्धि की सीमारेखा के बाहर की है— वाक्य मनातीत है।

तब फिर क्या वे (महापुरुष) अतुलित ही हुए रहेंगे? नहीं, ऐसा नहीं है। उपाय है— उनके स्वयं के अथवा निजानुरूप अन्य किसी महापुरुष के कथनानुसार वज़न-काँटे पर उनका परिमाप करना।

भगवान श्रीरामकृष्ण ने कहा था, स्वयं सचिच्दानन्द ही उनके शरीर में अवतीर्ण हुए हैं। और फिर नारद, व्यास तुल्य अहर्निश श्रीरामकृष्ण का गुण-कीर्त्तन करने वाले 'चपरासधारी', 'भागवतपण्डित' 'कथामृत'कार आचार्य श्री म ने श्री 'म' दर्शन में (यह कहकर) साक्ष्य दिया है— ठाकुर के अन्तरंग सन्तानगण, चाहे वे गृही हों अथवा संन्यासी, सभी हैं उनकी कृपा से पूर्णकाम। स्वामी विज्ञानानन्द महाराज भगवान श्रीरामकृष्ण की

अन्यतम अन्तरंग सन्तान हैं। इसलिए उन्हें ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ उत्तराधिकार सूत्र से, जैसे कि राजा का बेटा राज्याधिकार प्राप्त करता है।

अर्धशताब्दी से भी अधिक पुराने स्मृति पट पर अङ्कित शब्दजाल में सन्-तारीख-वार-हीन हुए उपदेशों की रत्नावली में से एक वाक्य-कुसुमाञ्जलि की रचना करना है तो एक दु:साहसपूर्ण कार्य; किन्तु भगवान् तो भक्ति से ही तुष्ट हैं और अकिंचन भक्तों का मङ्गल साधन में संलग्न हैं। इसी भरोसे से साहस करके यह क्षुद्रवाङ्मयी पुष्पांजलि पूजनीय हरिप्रसन्न महाराज की जन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष्य में उनके श्री करकमलों में सप्रेम समर्पित की जा रही है।

(2)

बेलुड़ मठ। गंगा का पश्चिमी तट। अपराह्न तीन। द्वितल का वराण्डा। पूर्व दक्षिण कोण में विज्ञान महाराज इज़ी चेयर पर बैठे हैं। उनके पीछे ही है स्वामीजी का कक्ष; और सामने उत्तर दिशा में तीन मील दूर गंगा के पूर्व तट पर है दक्षिणेश्वर मन्दिर। मठ में तब अल्प संख्या में साधु वास कर रहे हैं। दो-तीन जन युवक-भक्त कलकत्ते से आए हैं। वे ज़मीन पर ही दक्षिणास्य बैठे हैं। मठ के दो जन साधु भी आकर ज़मीन पर ही बैठ गए। एकजन साधु ने विज्ञान महाराज से प्रश्न किया, "महाराज, इस मठ की कुछ मूल बातें बताइए।" महाराज तो हैं स्वभाव से ही अल्पभाषी और गम्भीर। वे अन्य समय में दूसरी बातचीत उठाकर ऐसे प्रश्नों को उलटकर अन्य कोई मज़ेदार प्रसङ्ग से प्रश्नकर्त्ता को लगा दिया करते। किन्तु आज सम्मत हो गए (और बोले)—

स्वामी विज्ञानानन्द— भाई, यह मठ आरम्भ हुआ 1898 ईसवी में। तब स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी ने मठ पर टैक्स लगा दिया। उन्होंने कहा, ये मठ तो नहीं है। ये तो बाबुओं की बागानबाड़ी (उद्यान वाटिका) है। यहाँ तो साहब लोग और 'मेमें' आती-जाती हैं विलायत-अमरीका से। यहाँ सोफ़ा, पलंग, चेयर, टेबल आदि पश्चिमी सभ्यता के सभी वर्तमान साजो-

सामान हैं। इनका विलायत-अमरीका से यातायात होता रहता है। भारतीय प्राचीन मठ की तो ऐसी रीति नहीं है। इसलिए टैक्स तो देना ही होगा।

"हमने मुकद्दमा कर दिया, पहले हावड़ा में, बाद में हाईकोर्ट में। हमने कहा कि यह तो मठ है। यहाँ सर्वत्यागी संन्यासी ब्रह्मचारी रहते हैं; भारतीय वैदिक रीति से ये लोग संन्यास आदि संस्कार ग्रहण करते हैं। ये सभी नव्य शिक्षित हैं। पिता-माता-गृह-परिजन सब छोड़कर भगवान-दर्शन जन्य यहाँ सब रहते हैं और यथासाध्य साधन-भजन करते हैं। इनमें अनेक ही सम्भ्रान्त (respectable) घरों के लोग हैं। इसके अतिरिक्त दरिद्र-नारायण की, दु:खी-नारायण की सेवा करते हैं। 'आत्मनो मोक्षार्थं जगद्हिताय च'[1] प्राचीन काल की इस प्रथा का अनुसरण करते हुए ही इस मठ के प्रतिष्ठाता स्वामी विवेकानन्द ने यूरोप, अमरीका में भारतीय वेदान्त एवं धर्म का प्रचार किया है। इससे भारत का लुप्त गौरव परिव्याप्त हुआ है। अमरीका की शिकागो नगरी में जो धर्म-सम्मेलन हुआ था, उसमें उन्होंने वक्तृता देकर, जगत् विख्यात संन्यासी धर्म प्रचारक होकर ख्याति लाभ किया है। तभी तो सब देशों से धर्म-पिपासु जन इस मठ में यातायात करते हैं। ये सब श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव की शिष्य-प्रशिष्य सन्तानें हैं। वे संन्यासी थे। उन्होंने परमहंस तोतापुरी महाराज से विधिवत् संन्यास ग्रहण किया था। इसलिए इस मठ के साधुगण संन्यासी, शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित पुरी नामक दशनामी संन्यासी हैं। इसलिए यह सब तरह से भारतीय मठ है। यहाँ प्राचीन सभ्यता के अनुसार ही नित्य देव सेवा, गुरु सेवा, साधु-सेवा होती है।".... इत्यादि।

"प्रतिवादियों में प्रधान थे बेलुड़ के एक उच्च श्रेणी के लोग। कोई-कोई कहता कि इनके पीछे प्रेरक थे तब के भारतीय ब्रिटिश सरकार के एजेण्टस्।"

2. "एक दिन कोर्ट में मुकद्दमा चल रहा था। महाराज (स्वामी ब्रह्मानन्द) को साक्ष्य देना पड़ रहा था। वे महाराज थे मानी लोक, हमारे

---

[1] स्वयं के मोक्ष के लिए और जगत् के कल्याण के लिए।

प्रेज़िडेण्ट। उन्हें दो घण्टे तक साक्ष्य-कटघरे में खड़े रखकर दूसरे पक्ष के वकील क्रॉस कर रहे थे।"

"इसके बाद था सान्याल (ठाकुर के शिष्य, वैकुण्ठनाथ सान्याल) का साक्ष्य। उनके कटघरे में खड़े होते ही विपक्ष के वकील क्रॉस करने लगे। वे जो बोलते, सान्याल महाशय उसे ही स्वीकार कर लेते। हम सब निरुपाय होकर ठाकुर को पुकारने लगे— रक्षा करो प्रभु! आपका ही तो ये मठ है। अनेक समय तक क्रॉस करके सान्याल महाशय के मुँह से विपक्ष ने अनुकूल सभी बातें कहलवा लीं।"

"अचानक देखा, हाऊ-हाऊ (क्रन्दन) करते-करते सान्याल महाशय अज्ञान होकर गिर पड़े। तब सब उन्हें पकड़कर बाहर ले गए।"

"इसका यह शुभ फल हुआ। हमारे वकील के अनुरोध पर सान्याल महाशय का सारा साक्ष्य रद्द हो गया।"

"इस घटना से हम स्पष्टतया समझ पाए कि ठाकुर मठ में पीछे रहकर सब करवा ले रहे हैं। ठाकुर ने स्वामीजी से कहा था, तू कांधे पर रखकर जहाँ मुझे रखेगा (स्थापित करेगा), वहीं मैं रहूँगा।"

3. "जिस दिन इस मठ की प्रतिष्ठा हुई, उसी दिन स्वामीजी ने कहा था, इस साल से मेरे माथे पर जो बोझ चढ़ा हुआ था, आज वह उतर गया। 'आत्माराम' यहीं रहे।"

"उस प्रतिष्ठा के दिन ही स्वामीजी ने एक परीक्षण किया। वे बोले, 'ठाकुर, तुम जो यहाँ रह रहे हो, ये प्रमाणित हो जाएगा यदि कोई राजा आज इस मठ के दर्शन करने आ जाए।' सुबह से ही देखने लगे, कोई आया नहीं। मन कुछ खराब हो गया उनका। अपराह्न काल में कलकत्ता चले गए। वापिस आए तो उन्हें पता लगा कि अलवर के राजा उनसे मिलने आए थे। आपके दर्शन न पाने पर दु:खित होकर इन्तज़ार करके चले गए। यह संवाद सुनते ही स्वामीजी तो आह्लाद करने लगे।"

"स्वामीजी ने कहा था— यह मठ सात-आठ सौ साल काम करेगा। एक दिन ठाकुरघर से नीचे उतरकर भण्डारघर के सामने खड़े-खड़े बाबूराम

महाराज को यह बात बोले थे। वे थे महायोगी। उनकी कथा फलेगी ही फलेगी।"

4. "और एक बार उस मुकद्दमे के समय हावड़ा के जिला मैजिस्ट्रेट ब्रिटिश आई०सी०एस०, मठ-इन्सपैक्शन करने आए। स्वामीजी तब मठ में अस्वस्थ थे। स्वामीजी जब बाहर आकर ज्योंहि उन साहब के पास आए, त्योंहि वे हतप्रभ हो गए। स्वामीजी जो-जो बोले, वही वे मानते चले गए। स्वामीजी का उत्तेजनापूर्ण भाव देखकर राखाल महाराज चिन्तित हो गए कि कहीं बाद में असुख बढ़ न जाए। तभी वे स्वामीजी को पकड़कर दोतल के अपने कक्ष में ले गए। बोले, स्वामीजी, तुम विश्राम करो। हम सब देखते हैं।"

एकजन युवक भक्त— तो फिर महाराज कैसे इस मठ को टैक्स के हाथों रिहाई मिली?

स्वामी विज्ञानानन्द— "जब यह मठ रूप में स्वीकृत हुआ, इसके बाद कितने काण्ड हुए। कदम-कदम पर ठाकुर का (वरद) हस्त देखा गया। तब हाईकोर्ट में मुकद्दमा चल रहा था। मिस्टर पियर्सन थे कलकत्ता के अमेरिकन काऊन्सल-जनरल। उनकी पत्नी थीं स्वामीजी की भक्त। उन्होंने भारत सरकार को बताया, सोफ़ा-काउच आदि द्रव्य हमने स्वामीजी को उपहार में दिए थे, अमेरिका में इनका उन्होंने प्रयोग किया था। ये सब पवित्र द्रव्य हैं इसलिए हमने ही इन्हें यहाँ लाकर रख दिया है। स्वामीजी तो हैं संन्यासी श्रेष्ठ। उनके द्वारा प्रतिष्ठित यह मठ तो है सत्यस्वरूप साधुओं का मठ। हम हैं इस मठ के प्रति कृतज्ञ।"

"तब जाकर टैक्स बन्द हुआ।"

5. "स्वामीजी कितने ऊँचे पर रहा करते। हमें तो उनके पास जाने में भी डर लगता था। लेकिन वे बाप की तरह देखते थे और प्रेम-शुभेच्छा में हमें डुबाए रखते थे। राखाल महाराज के सामने तो स्वच्छन्दता का बोध किया करते। वे हमारे गार्डियन थे। स्वामीजी, राखाल महाराज— ये तो इतने गम्भीर थे कि इनको समझने की शक्ति कहाँ हममें?"

6. "एक दिन स्वामीजी हमारे कक्ष के सामने से पाखाने जा रहे थे। मेरी इच्छा हुई कि उनके पाँव छूकर प्रणाम करूँ। ज्योंहि पैर में हाथ दिया तभी इलैक्ट्रिक शॉक लगा। चमक कर हाथ हटा लिए। स्वामीजी हँसने लगे। पूछने लगे, क्या रे पेशन, क्या हुआ? विस्मय से मैंने कहा, यही तो मशाय, इलैक्ट्रिक शॉक। स्वामीजी कहने लगे, अमेरिका में सब खरच हो गया। वहाँ तो और भी ज्वलन्त था।"

"मैं स्वामीजी को नित्य प्रणाम करता नहीं था। जब इच्छा होती तभी कर लेता था। यह घटना हुई जब मठ लीलाम्बर मुखर्जी की बाड़ी में था।"

7. "एक दिन स्वामीजी बोले, मठ में जल का बड़ा कष्ट है। एक घाट बना लो पेशन। और बोले, चन्दा उठाओ (इकट्ठा करो)। मठ के साधुओं को चन्दा देने को बोलो। भिक्षा करके उठाओ चन्दा। मैं अढाई सौ रुपए दूँगा। जो जैसा संग्रह कर पाया, वैसा ही दे दिया। काम शुरु हो गया। स्वामीजी के रुपए बाकी मैंने माँग लिए। बोले, कैसे रुपए? मैं बोला, घाट बनाने के लिए। आपने अढ़ाई सौ रुपए देने को बोला था। सुनते ही गुस्सा गए। बोले, दूँगा कहने से ही देना होगा, ऐसा भी कहा था क्या?"

"तब स्वामीजी अतीव उच्च भाव में डूबे रहते थे सर्वदा। अन्य बातचीत होते ही तीव्र यातना अनुभव किया करते। और फिर मन जब नीचे रहता तो मानुषवत् हो जाते। कोई रुकावट नहीं। परमहंस अवस्था।"

(3)

अतीव गहन पाण्डित्य, प्रशान्त स्वभाव, गम्भीर प्रकृति, सुदृढ़ शरीर लेकर उन्होंने जन्म ग्रहण किया। आगरपाड़ा में गोविन्द ठाकुर के घर खेल रहे चतुर्दश वर्षीय हरिप्रसन्न को देखते ही ठाकुर ने उन्हें अपना जन बताकर चिह्नित कर लिया था। डिस्ट्रिक्ट इन्जीनियर का उच्च कर्म छोड़कर ठाकुर के इशारे मात्र से ही वे मठ में योगदान करने लगे। उसके बाद सारा जीवन ही वैराग्य का आश्रय लेकर इलाहाबाद में वास किया। सूर्य सिद्धान्त[1]

[1] सूर्य सिद्धान्त ज्योतिष शास्त्र का एक अतीव प्रामाणिक एवं क्लिष्ट ग्रन्थ है।

का अनुवाद उनकी अक्षय कीर्त्ति है। वे सर्वदा ही एक पाण्डित्यपूर्ण गवेषणा लिए रहते थे। उनका अनुवाद किया नारद पञ्चरात्र उनके भीतर के सुदृढ़ भक्तिभाव का परिचय देता है। शरीर त्याग से पूर्व भी वे रामायण का अनुवाद कर रहे थे।

"वे एकान्त में रहना पसन्द करते थे। मठ के किसी काम से बुलावा आने पर उसे सर्वान्तरकरण से निपटा देते थे। किन्तु बराबरी के लिए विशेष किसी कर्म में प्रवेश नहीं करते थे। मठ के ट्रस्टी हुए नहीं। घटनाक्रम से मठ के प्रेज़िडेण्ट हो जाने पर वे बाध्य होकर ट्रस्टी बनने को राज़ी हुए। मठ में स्वामीजी का मन्दिर बनने के समय उसका भार उन पर ही पड़ा। तब लम्बे समय तक मठ में ही वास किया।"

"सुबह-सुबह राजमिस्त्रियों के आने के पूर्व ही मन्दिर के सामने बैठ जाते एक बैंच पर। शीतकाल। सामने गङ्गा। शरीर पर होता लाल कम्बल काट कर बनाया गया एक गरम कोट, पैरों में कुछेक जोड़े गरम मौजे और सिर पर कानढकी टोपी रहती। और गले में मफलर। पैर में चटी जूता। स्थिर होकर घण्टों बैठे रहते। इतने काम में भी प्रशान्त मूर्त्ति। उन्हें देखकर लगता जैसे गम्भीर ध्यान में निमग्न हैं। इसी बीच एक-एक करके मिस्त्रियों को काम की छोटी-से-छोटी बातें भी बताते। देखकर लगता कि जैसे चौदह आने मन तो भगवान में निमग्न है, और दो आने मन से सब काम देख रहे हैं। लेकिन इन दो आने मन का तेज इतना अधिक होता था कि कर्मीगण उनके वेद को धारण नहीं कर पाते थे। उनको इस भाव से निश्चल बैठे देखकर किसी-किसी के मन में उठता कि कहीं ये ध्यान तो नहीं कर रहे; कारण, काम में तो मन नहीं है। तब उनकी धारणा मुहूर्त्त में ही टूट जाती जब वे काम की सूक्ष्म त्रुटि अथवा अवहेला पकड़वा देते थे।"

"वे बहुत धीरे बातें करते थे। और बात-बात में 'भाई' कहकर यह प्रीतिपद आत्मीयता व्यञ्जक शब्द उच्चारण करते थे।"

बारह या चौदह आने मन हो ईश्वर में बाकी से काज करो

"उनकी पर्यवेक्षण शक्ति थी असाधारण। ठाकुर बोल गए थे, 'बारह आने या चौदह आने मन ईश्वर में रखकर बाकी मन से काज करना।' इसी महावाक्य के

मूर्त्त दृष्टान्त थे वे।"

"स्वामीजी का जो कर्मयोग का आदर्श था— in the midst of intense activity, intense calmness— यह हरिप्रसन्न महाराज में मूर्त्त हुआ था।"

"ये तब मठ में दोतल पर खोका महाराज के कक्ष में रहते थे। अवसर समय गंगा के बरामदे में स्वामीजी के कक्ष के एक कोने में बैठ जाया करते। एक दिन वहीं बैठे थे। तब दो-तीन भक्त आए। उनका विचार होने लगा कि पुरुषकार बड़ा है या कृपा बड़ी है। इसी बीच और लोग भी आ गए। महाराज से पूछने लगे, कौन बड़ा? वे हाँ-ना बिना बोले ही एकजन को दिखाकर बोले, भाई, तुम बोलो। अब फिर तर्क युद्ध शुरु हो गया। वे सब उदासीन भावे मज़े से सब देख रहे हैं! और बीच-बीच में आँखों-आँखों में हँस रहे हैं— जैसे दुष्ट बालक की हँसी। वाग्युद्ध बढ़ता ही चला गया। तब सबने निश्चय करके महाराज से पुनराय जिज्ञासा की, कौन-सा बड़ा है? उन्होंने निर्विकार भाव से उत्तर दिया— जो जिसे बड़ा सोचता है, उसके पास वही बड़ा है।"

"और एक दिन कुछेक भक्तों ने आकर घेर लिया कुछ धर्म-कथा सुनाने के लिए। उन्होंने पॉकेट से एक डायरी निकालकर इधर-उधर से संवाद पढ़ना शुरु कर दिया। वह सब समाचार पत्र से लिखा गया था। अपनी बड़ी-बड़ी दोनों आँखों में बनावटी विस्मय आरोपित करके वे बालक की भाँति हाव-भाव दिखाने लगे। कागज़ पर लिखे संवाद के आनन्द से भी महाराज के मुख पर प्रकाशित बालक जैसा आनन्द भक्तगणों के मन में अधिकतर आनन्द प्रदान करने लगा।"

"कल्पित विस्मय सहित पवित्र अनाविल आनन्द केवल मात्र ब्रह्मद्रष्टा के मुखमण्डल पर ही सम्भव है, भक्तगण अवाक् होकर यही सोचने लगे। और मन में भावना करने लगे कि हम धन्य हैं, कृतकृत्य हैं इस युग में जन्म ग्रहण करके। क्यों? क्योंकि भगवान नरकलेवर में श्रीरामकृष्ण-देह में आविर्भूत होकर ही कथावार्त्ता में, आहार-विहार में, काजकर्म में, हँसी-तमाशे में भी ब्रह्मज्ञान का जो दुर्लभ दर्शन अतिक्षीण पर्दे की ओट में से

देख पा रहे हैं। ठाकुर के सभी सन्तानगण ही— गृहीसंन्यासी— स्थितप्रज्ञ हैं और ब्रह्मज्ञान के नित्य क्रिया-कर्म में ब्रह्मज्ञान के वाहक हैं। शास्त्र में कथित ब्रह्मज्ञान यहाँ मूर्त्त है। सारे जीवन में कोई एकजन ब्रह्मज्ञानी के दर्शन मिलते नहीं; और अब तो अवतार के आने से हम जैसे ब्रह्मज्ञानियों की हाट में निवास कर रहे हैं; भक्तगण यही सब बातें सोचने लगे। कैसा इनका हृदयग्राही आचरण है, हँसी, तमाशा सब है! भक्तगण तो आए थे धर्मकथा सुनने, और महाराज ने तो निर्वाक् आचरण से ब्रह्मज्ञान का दर्शन ही करवा दिया। अवतार के पार्षदों में यह सम्भव है।"

"और एक दिन उसी बरामदे में हरिप्रसन्न महाराज बैठे हैं। दो बन्धु आए हैं। वही नालिश करने लगे। एकजन बोला, महाराज, ये कहता है ज्ञान बड़ा है। ठाकुर कह गए हैं, भक्ति अन्तर्महल में जा सकती है। ज्ञान बाहर रहता है। ठाकुर की बात यह नहीं मानता। दोनों वृहत् चक्षु विस्फारित करके उसी कल्पित विस्मय से उन्होंने सुना। इशारे से दूसरे एकजन को बोल दिया जवाब देने को। वे तो निर्वाक् हो गए और कौतूहल से आक्रान्त। दूसरा जन बोला, ठाकुर ने कहा है, ज्ञानसूर्य के तेज से भक्तिहिम का ढेला गल जाता है। वह होने से ही हो गया ज्ञान बड़ा।"

"इसी बीच और लोग आ गए। इशारे से उन्होंने उनको भी योगदान करने को बोल दिया। उभय पक्ष के उत्तर-प्रत्युत्तर वेग से चलने लगे। अन्त में किसी के भी युक्ति द्वारा अन्य को न हरा पाने पर वे महाराज के शरणापन्न हुए। वे बोले, भक्त के पास भक्ति बड़ी; ज्ञानी के पास ज्ञान बड़ा है साधक की अवस्था में। सिद्धावस्था में दोनों हैं एक।"

सिद्धावस्था में भक्ति, ज्ञान— दोनों एक

"स्वामीजी के मन्दिर के सामने बैठकर जब वे गहन कर्म में लगे होते, तब गीता (4:14) की बात मन में होती :

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥"

"हरिप्रसन्न महाराज का मन सर्वदा तत्त्व में, आत्मस्वरूप में, ठाकुर में निमग्न। अथच बाहर इतना काज चलता।"

"एक बार माखन का एक बड़ा टीन ले गया एकजन युवक भक्त और उसके साथ इस्टर्न होटल द्वारा तैयार कुछेक मिल्क रोल पाव रोटी। महापुरुष महाराज को ये दिए जाने पर वे बोले, यह टीन तो हरिप्रसन्न महाराज को दे आओ। ये खूब उच्च कोटि के साधु हैं। उनको खिलाने से ठाकुर को ही खिलाना होगा। तत्त्वज्ञ जन है, महावैराग्यवान्। युवक के द्वारा माखन का टीन उन्हें दिए जाने पर वे आनन्द-प्रकाश करने लगे और बालक की न्यायीं सरल, अकपट भाव से बोले, माखन खाऊँगा किससे, रोटी कहाँ? भक्त महापुरुष महाराज को कहकर मिल्क रोल रोटी उन्हें दे आए। रोटी और माखन का टीन दोनों हाथों में लिए कहने लगे— ये माखन है ब्रह्म और यह रोटी है शक्ति। ब्रह्म-शक्ति एक संग रहते हैं। और फिर अभेद।"

"मठ में स्वामीजी के जन्मोत्सव पर उस वर्ष सान्फ्रांसिस्को मठ के अध्यक्ष स्वामी प्रकाशानन्द अनेक वर्षों बाद बेलुड़ मठ आए थे। उनके आह्वान पर अमेरिकन भक्त फॉक्स सिस्टरद्वय— प्रेमिका और राधिका मठ में थीं। हरिप्रसन्न महाराज भी तब मठ में थे। मॉर्टन स्कूल के भक्तगण मठ में वास कर रहे थे, उसी उत्सव के सेवाकार्य के लिए। उत्सव शेष हो गया। भक्तगण कलकत्ता लौट रहे हैं। एक युवक सकाल बेला में महाराज को प्रणाम करने गए। वे उच्छावासित कण्ठ से बोलने लगे, ये जो कई दिन दिन-रात काम किया है बिना खाए, बिना सोए; और सबको खिलाया है, यही हुआ (असल) काज। और सब अकाज। निज के लिए जो करता है, वह मरता है। बचता वही है जो दूसरे के लिए करता है।"

"मठ में स्वामी धीरानन्द महाराज का महाप्रयाण का भण्डारा हो गया है। उत्तम भण्डारा हुआ। खाद्य द्रव्य खूब भले हुए। हरिप्रसन्न महाराज तब प्रेज़िडेण्ट। उनके कक्ष में साधुजन बैठकर भण्डारे की बातों की आलोचना कर रहे थे— यह वस्तु खूब अच्छी थी, वह मिष्टी उत्तम रही— ऐसी ही सब बातें। महाराज मौन हुए सुनते रहे। साधुओं की आलोचना के उत्साह में उस समय भाटा आ गया जब वे गम्भीर वाक्य से अर्थपूर्ण स्वर में कहने लगे, आज केष्ट लाल महाराज गए हैं, कल जो तुम्हें भी तो जाना होगा। वह बात सोची है क्या? साथ-साथ यह भी सोचना।"

"इसी समय एक दिन उनके बारे में रसकारी प्रचुर मिष्टान्न इकट्ठा हो गया। यह सब कलकत्ता के भक्तों का उपहार था। कुछेक साधु उनके कमरे में बैठे थे। उन्होंने साधुओं को मिष्टान्न देने को कहा। उन्होंने सेवक के हाथ से कड़ाही लेकर जिसे जो मिला लेकर खाने लगे। उनका यह असंयम देखकर वे मन-मन में असन्तुष्ट हुए, किन्तु मुख से कुछ बोले नहीं। सबके चले जाने पर सेवक को दृढ़ स्वर से आदेश किया, जाओ ये सब मिठाई गंगा में फेंक आओ। सेवक मिठाई लेकर नीचे गए। कुछेक गंगा में फेंक दी। कुछेक किसी अन्य के परामर्श से प्रसाद भण्डार में रखवा दी भक्तों के लिए।"

"एक बार हरिप्रसन्न महाराज मठ में थे। तब प्रेज़िडेण्ट हुए नहीं थे। श्री म मठ में आए। ऊपर के बरामदे में इज़ी चेयर पर अर्धशायित अवस्था में थे महाराज। श्री म ने दोतल पर जाकर स्वामीजी का कमरा देखा।

कथामृत— क्या ही वस्तु!

हरिप्रसन्न महाराज ने चेयर से उठकर युक्तकरे श्री म को प्रणाम किया और बोले, कथामृत एक और उसके लेखक एक। ऐसा और होता नहीं। जितनी बार पढ़ी, उतनी बार ही नूतन होकर मन को लगी। क्या वस्तु ही बनाई है मास्टर महाशय! कैसा अद्‌भुत चार्म!"

"मठ के सब साधुओं से पूछकर जान पाया कि चौदह आना साधु हुए हैं कथामृत पढ़कर और आपसे मिलकर; और दो आना साधु हुए हैं हम सब से मिलकर।"

एक बार एकजन भक्त श्री म से बोले, हरिप्रसन्न महाराज खूब गम्भीर हैं और एकान्त में रहना पसन्द करते हैं। श्री म ने उत्तर दिया, "वस्तुलाभ होने से ही यह अवस्था होती है। ठाकुर कहते थे, कलसी पूर्ण हो जाने पर शब्द होता नहीं।"

और एक बार एकजन भक्त श्री म से बोले, "हरिप्रसन्न महाराज हैं अति कठोर नीतिवान्।" श्री म ने उत्तर दिया, "महापुरुषगणों का हृदय होता है वज्र जैसा कठोर और कुसुमों से भी कोमल— 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमानीव।' " उन्होंने और कहा, "सुना है, उनकी गर्भधारिणी एक

बार तीर्थ में इलाहाबाद गईं। आश्रम में रहती हैं और सब दर्शनादि करती हैं। दर्शनादि शेष होने पर माँ जा नहीं रही हैं, देखकर बोले, माँ, कब जा रही हो? माँ अवाक् होकर बोलीं, बाबा, यही तो आई हूँ, कुछ दिन रहने दो ना।— यह क्या निष्ठुरता है? लोकशिक्षा के लिए साधुओं का यह आचरण है।"

एक बार एकजन भक्त श्री म से बोले, 'मठ में सुना, हरिप्रसन्न महाराज का त्रिवेणी-दर्शन हुआ था। देवी को देखा, ज्योतिर्मय उनका रूप। माथे पर तीन स्वर्णोज्ज्वल वेणी। जल से उभरकर आकाश में लीन हो गईं।" वे विस्मयाविष्ट हो गए। राखाल महाराज के द्वारा यह बात बताए जाने पर वे बोले, "पेशन, तुमने तो किला फतह कर लिया।" श्री म कहने लगे, "इसमें फिर कैसा आश्चर्य। महात्माओं के द्वारा ही तो तीर्थ माहात्म्य की रक्षा होती है। ठाकुर की सन्तानगण हैं सचल तीर्थ। ठाकुर ही तो हैं त्रिवेणी देवी।"

— स्वामी नित्यात्मानन्द

अनुवाद : डॉ. नौबत राम भारद्वाज

स्वामीजी का अवदान

"एक समय भारत के लोग मन में सोचते थे, अंग्रेज़ों का सब ही अच्छा है। What Shakespeare says (शेक्सपीयर ने क्या कहा है) मिल, जेम्स— इन सब की खूब दुहाई देते। स्वामीजी ने वह तोड़ दिया। मुझे लगता है, जेम्स भी अन्त में बोले थे, life (जीवन) की problems solve (समस्या का समाधान) एकमात्र वेदान्त करता है और कोई नहीं। आहा, कैसी शक्तिशाली भाषा है स्वामीजी की! मृत शरीर में प्राण संचार कर देती है! कारलाइल (Carlyle) की भाषा भी उसके पास नहीं ठहरती। स्वामीजी भारत की दृष्टि-शक्ति को अपने अतुल आध्यात्मिक ऐश्वर्य की ओर आकृष्ट कर गए हैं— यही है स्वामीजी का अवदान।"

— श्री म दर्शन-III, पृष्ठ 196, द्वितीय संस्करण

स्वामी विवेकानन्द

(1893-1902)

- घर का नाम : नरेन्द्रनाथ दत्त।
- जन्म : 12 जनवरी, सन् 1863 ईसवी।
- स्थान : सिमला मुहल्ला, कोलकता।
- माता-पिता : श्रीमती भुवनेश्वरी देवी और विश्वनाथ दत्त।
- शिक्षा : बी०ए० दर्शनशास्त्र में विशेष रुचि।
- गुरु : श्रीरामकृष्ण परमहंस।
- बेलूड़ मठ की स्थापना : फरवरी, 1898 ईसवी।
- महासमाधि : 4 जुलाई, 1902 ईसवी।

●

About Swami Vivekananda in "M., the Apostle & the Evangelist" Vol. 1[1]

[The book M., the Apostle & the Evangelist contains some new facts about the Paramahamsa Deva and the Holy Mother, as well as the words of their intimate disciples, such as Swami Vivekananda, Swami Brahmananda, Swami Abhedananda and Mahapurusha Maharaj. In addition, it contains a commentary by its writer on the Kathamrita, The Gospel of Sri Ramakrishna. It also contains an interpretation of the Upanishads, the Gita, the Bhagavata, the Purana, the Bible, and other holy texts, in the light of the life of Sri Ramakrishna from Sri M.'s mouth. In this article, are given excerpts about Swami Vivekananda from Volume 1 of M., the Apostle & the Evangelist.]

Sri M. is saying : In the sphere of religion, Swamiji's conquest is greater than that of Caesar, Alexander and Napoleon.

If India's youth follows Swamiji, it will not only benefit them, but it will benefit the country and the people as well. It is Shukadeva himself who has reappeared as Narenderanath, in a new body. He has no needs of his own whatsoever. He is already a nityasiddha, ever-perfect, godlike, one of the saptarishis; his advent is for the good of India and the world. He has descended from the fourth floor to the ground floor to teach to man the service of God – Narendra, the crest jewel of Ramakrishna! He possessed all eighteen qualities, whereas Keshab had but one. [page 4]

In a conversation with a devotee, Pulin, in Mihijam, Sri M. explains about the hymn Swami Vivekananda wrote about Sri Ramakrishna. Also, it mentions about Swamiji saying

---

[1] 4th edition, 2021

that lakhs of Vivekanandas could have been created by Sri Ramakrishna.

Pulin: "I have heard that Swamiji gave a wonderful interpretation of religious doctrine and charmed his audiences in Rajputana by unassailable arguments. Swami Niranjanananda showered great praise on Swamiji for it. It is said that, hearing this, Swamiji remarked, 'What nonsense to repeat Vivekananda, Vivekananda! Don't you know that through the grace of the guru, Saraswati, the Goddess of learning, plays at the tip of my tongue? Out of a handful of dust, lakhs of Vivekanandas can be made by him— this Ramakrishna.' And I have also heard that Mr. Sevier gave him ₹800/- unasked, for his Kashmir trip, but Swamiji kept only half and returned the rest. What control over greed!"

Swamiji knew nothing but Thakur. Just read the hymn of praise and dedication written by him and see for yourself. In the dedication he says, 'O friend of the poor! Thou alone art my refuge.' And again he says, 'Thy feet confer immortality on mortals, snapping the chain of birth and death.' That is, whoever meditates on him does not fall again into the circle of birth and death. The fear of death disappears. [page 57-58]

At one place Sri M. explains the so many qualities of Swami Vivekananda and his learning in various fields.

"Just see how much Swamiji studied: History, Literature, Science, Astronomy, Law, and much more. He came across a large number of men and had to deal with them in different ways. Had he not been so versatile, how could he have spoken to them? It is good to possess qualifications – they are instruments. [page 60]

How many-sided was Swamiji! How much did he know and how much did he study! That's why he was able to deal so well with everyone in foreign lands. [page 77]

"How many things Swamiji knew! Singing, playing instruments, wrestling, knowing different scriptures, the ability to speak in many different languages, science, art, literature, eastern and western philosophy, cooking, and much more. [page 78]

Here Sri M. talks about how to face the troubles and sorrows as well as pain like Swami Vivekananda.

It is by going through so much trouble that Swamiji became such a great man. That's why he used to say, 'Are they men, those who have not passed through sorrow and pain? Whether wealthy or learned or ninety years old, they remain babies, little babies!' [page 139]

Swamiji himself passed through poverty, so he always had deep sympathy for the poor. That's the origin of the sevashrama and service of the God-in-the poor. [page 140]

"At the time of sorrow and pain, one should remember Swamiji. One has to face trouble like a hero. You must say: 'Let them come if they must. They can't do me any harm.' When the mind becomes weak, you should pray to Mother. You have to be brave, otherwise how will you stop the external enemies, sorrow and pain, and the inner ones of lust, anger and greed? You are surrounded by enemies, in and out. [page 140]

"Swami Vivekananda said, 'Those who have not seen trouble and tribulation are babies, little babies.' He used to say to his friends, 'What do you know about trouble and tribulation? Those who have not faced danger and difficulties – are they men at all?' [page 412]

Sri M. below talks about Sri Ramakrishna transmitting his power to Swami Vivekananda.

Pulin: "Well Master Mahashay, it's said that Thakur transmitted power to Swamiji before he died."

M.: "Yes, but not exactly so. Before dying, he talked to several of his intimate ones, alone in his room, one by one. Swamiji told me one day, 'Please promise that you will not reveal it to any one: Thakur transmitted power to me.' [page 175]

Here Sri M. talks about renunciation of Swami Vivekananda concerning "lust and gold".

"Thakur has created this class – for example, Swami Vivekananda. Nothing could tempt him. The whole world fell at his feet, but he asked for nothing for himself. Even after his world-conquest when he returned from America, he wore only a copin, a strip of cloth. What renunciation! He would beg clothes from devotees (M. and others) and the ferry hire when he came to Calcutta. He did not keep a single pie with him. This is a class apart.

"An heiress, a multimillionaire American, said to Swamiji, 'Please accept my beauty, youth, and wealth.' Swamiji replied, 'My good lady, this cannot be. Womankind is my mother. I am a sannyasin.' [page 282]

The excerpt below refers to Swamiji's conferring honour to a person who saved his life when he was travelling to Almora.

The Attendant : "What generosity! He conferred royal honours on his friend publicly. It is said Swamiji also did something like this. In Almora, in a public reception, Swami Vivekananda spotted the man who had saved his life by offering him a cucumber and conferred great honour on him and also gave him presents."

M.: "It is characteristic of great men to remember any good forever – and they are ever grateful." [page 414]

The excerpt below refers to Swamiji's meeting with Max Muller and how much regard Max Muller conferred upon Swami Vivekananda in London.

"What a mighty man! It is he [Max Muller] who has preserved the Vedas and the Upanishads. He really belongs to this country but has taken his birth in the West. Swami Vivekananda also spoke very highly of him. Sometimes he'd say, 'Just now I have returned from the presence of Vaishishtha Deva.' Other times he'd say, 'Acharya Sayana, the commentator of the Veda, has reappeared in that body.'

"What patience! Sanskrit is such a difficult language, but he mastered it. He spent half a century collecting the Vedas. What perseverance, what learning!

"And how happy he was to meet Swamiji! What affection he showered on him! How great! It is said that at the Southampton (London) railway station, he held an open umbrella over Swamiji. When the latter protested, he said, 'You are the child of Sri Ramakrishna. Is it every day that a son of Sri Ramakrishna can be seen?' See how generous he was? What deep insight he had! Such a great and venerable savant! Born in that rajasic country, and yet he maintained his humility! These are signs of great men.

"Max Muller used to watch Keshab Sen, who underwent a great transformation after meeting Thakur. Max Muller noticed it, but he could not fully understand at that time how such a transformation had come about. However, later, when he met Swami Vivekananda and heard all about Thakur, he understood. In the end, he wrote a life of Thakur." [page 421-422]

> The below excepts tell about Swamiji's refusal to accept the occult powers and Song of Sannyasin. Moreover, a saying of Swamiji is mentioned below.

"The eight occult powers – drying up of the ocean, felling of mountains – acquiring the power of doing all these supernatural acts is of no avail. That's why Swami Vivekananda refused the eight occult powers when Thakur offered them to him. Arjuna did not accept them for the

same reason. What purpose would it serve to possess them? The body itself will be no more. [page 427]

"A liberated person, on the other hand, says to himself: it is the senses that move among sense objects, nothing belongs to me. I am liberated. Even living amidst the wealth of America, the Song of the Sannyasin always rang within him (Swami Vivekananda) – 'I am free, ever free.'" [page 445]

Avataras and all other God-realized souls suffer most of all. The great Swamiji said the same thing: 'Know that the loftier your heart, the greater your sorrow.' [page 473]

Collection : Nitin Nanda

संन्यास माने क्या

श्री म *(भक्तों के प्रति)*— संन्यास माने मन में त्याग। गृह में रहकर संन्यासी खूब कम, प्राय: दुर्लभ। जनकादि का हुआ था, ठाकुर ने कहा था। फिर भी जो गेरुआधारी, जिन्होंने बाहर से त्याग किया है, ceremony (संस्कार) किया है, उनसे expect (आशा) की जाती है। ठाकुर ने बताया, पञ्चवटी में साधु बैठा कपड़ा सिलाई करता है और गल्प करता है, फलाने बाबू ने खूब खिलाया— हलुआ, जलेबी, कचौरी *(सब का हास्य)*। इनका बाहर से त्याग हुआ है; भीतर से नहीं। *(डॉक्टर के प्रति)* क्या है गीता में?

डॉक्टर कार्त्तिक—

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचार: स उच्यते॥

[कर्मों को आरम्भ ही न करने से मनुष्य निष्कर्मता को प्राप्त नहीं होता। न ही (कर्मों को) छोड़ने मात्र से सिद्धि प्राप्त करता है। कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण करके भी जो मूढ़ मनुष्य इन्द्रियों के विषयों का मन से चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी कहलाता है। — गीता 3:4, 6]

— श्री म दर्शन, तीसरा भाग, पृष्ठ 113—146

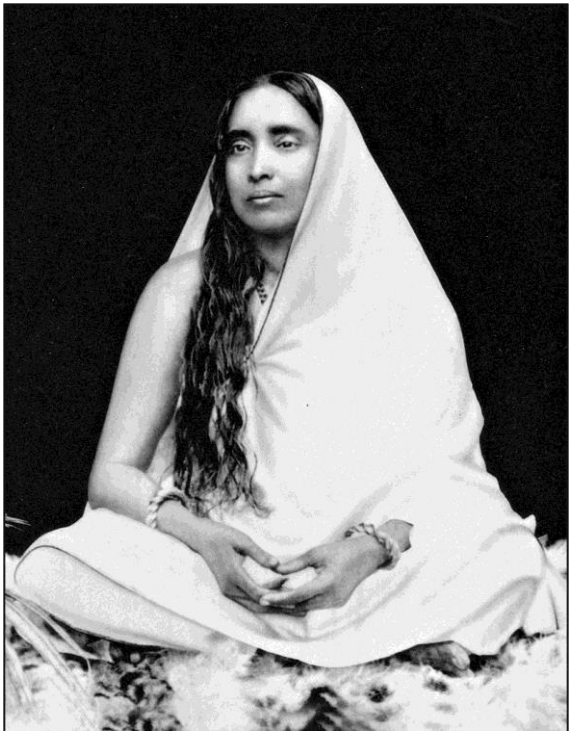

माँ सारदा

(1853 – 1920)

- जन्म : 22 दिसम्बर, सन् 1853 ईसवी।
- स्थान : जयराम बाटी (कामारपुकुर से 4 मील और दक्षिणेश्वर से 60 मील)
- माता-पिता : श्रीमती श्यामा सुन्दरी और श्री रामचन्द्र मुखोपाध्याय।
- भाई-बहन : चार छोटे भाइयों की बहन।
- विवाह : 6-7 वर्ष की अल्पायु में सन् 1859 में 22-23 वर्षीय ठाकुर रामकृष्ण के साथ।
- दक्षिणेश्वर-वास : प्रथम बार सन् 1872 में गंगा-स्नान के लिए जा रहे यात्री-दल के साथ 60 मील पैदल चल कर दक्षिणेश्वर पहुँचीं। बाद में वे आवश्यकतानुसार कभी दक्षिणेश्वर, कभी जयराम बाटी रहती रहीं। ठाकुर के देहावसान के पश्चात् वे प्राय: कोलकता रहा करतीं।
- महासमाधि : कोलकता में 21 जुलाई, सन् 1920 ईसवी को रात्रि डेढ़ बजे।

●

शत शत नमन माँ सारदा

[भक्तों के हृदय का स्पर्श करतीं व उनके मन का उन्नयन करतीं माँ की कुछेक बातें :]

पवित्रं चरितं यस्या: पवित्रं जीवनं तथा।
पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै देव्यै नमो नम: ॥

जिनका चरित्र एवं जीवन पवित्र है, जो पवित्रता की प्रतिमूर्ति हैं, उन देवी को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

ऐसी हैं हमारी श्री माँ सारदा देवी।

भगिनी निवेदिता के शब्दों में, "माँ, प्यारी माँ, स्नेह से लबालब हो तुम। तुम्हारे स्नेह में हमारे जैसा उच्छ्वास या उग्रता नहीं है, वह पृथ्वी का प्रेम नहीं, स्निग्ध शान्ति है जो सभी का कल्याण करती है, किसी का अमंगल नहीं करती। जिसमें स्वर्णिम आलोक भरा है, खेल भरा है।.... सचमुच तुम ईश्वर की अपूर्वतम सृष्टि हो।"

ऐसी सरल, सहज, शान्त प्रेममयी माँ की गहन आध्यात्मिकता का प्रमाण ये उनके सारगर्भित स्नेहपूर्ण उपदेश हैं जिनमें वे सहजता से ही मन की प्रकृति (चंचलता) एवं मन:संयम के विषय में कहतीं हैं :

- बेटा, यह मन तो मतवाला हाथी है, हवा के साथ-साथ दौड़ता है। इसीलिए सब कुछ का सदसत् विचार करके देखना चाहिए और भगवान् को पाने के लिए खूब परिश्रम करना चाहिए।
- मन ही सब है— मन में ही शुद्धि है और मन में ही अशुद्धि। मनुष्य पहले खुद को दोषी बताता है, तभी दूसरे में दोष देखता है। दूसरों में दोष देखने से भला उसका क्या होगा? खुद को ही हानि होगी।
- सब कुछ मन में ही है— पवित्रता एवं अपवित्रता भी मन में ही है।
- जिसका मन पवित्र है, उसे सब कुछ पवित्र दीखता है।

- ठाकुर का काम करना और साधन-भजन करना, थोड़ा-बहुत काम करने से मन में व्यर्थ के विचार नहीं उठते। चुपचाप बैठे रहने से मन में तरह-तरह के विचार उठते रहते हैं।
- अधिक प्रश्न करना ठीक नहीं। एक ही चीज़ पचा नहीं सकते और दस चीज़ें मन में लेकर यह ठीक, न वह ठीक, केवल यही चिन्ता करना ठीक नहीं।
- पानी का स्वभाव ही निम्नगामी होता है पर उसे भी सूर्य की किरण आकाश की ओर खींच लेती है। उसी प्रकार मन का स्वभाव ही है नीचे की ओर— भोग में। उसे भी भगवान की कृपा ऊर्ध्वगामी बना देती है।
- तुम लोगों के असल में कोई वासनाएँ नहीं हैं। वे सब कुछ नहीं हैं। वे सब मन की तरंगें हैं, यों ही उठती हैं और चली जाती हैं। वे सब जितनी निकल जाएँ उतना ही अच्छा है। जब तक मैं है, तब तक वासना रहेगी ही। उन सब वासनाओं से तुम लोगों का कुछ नहीं होगा।
- तीर्थगमन दु:ख-भ्रमण होकर मन का उच्चाटन मत हो रे। बाहर घूमने के बदले घर बैठकर प्रभु-चिन्तन यदि कर सको तो करो रे।
- जब मन प्रभु को छोड़कर किसी अन्य वस्तु के पीछे इधर-उधर भागे, तब उस वस्तु को क्षणिक समझो और अपने मन को प्रभु-चरणों में समर्पित कर दो।

प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा जैसी यौगिक क्रियाओं की अपेक्षा माँ की ये पवित्र युक्तियाँ चित्त की वृत्तियों का व्यावहारिक रूप में निरोध करती हैं। प्रेमाभक्ति से सहज ही मन विश्राम पाता है, स्थित हो जाता है निज स्वरूप में।

शत शत नमन श्री माँ!

- कंचन शर्मा

स्रोत : श्री माँ सारदा देवी की अमृतवाणी

Activities of Sri Ma Trust

Sri Ma Trust was registered on December 12, 1967 at the residence of Principal Dharm Pal Gupta at Rohtak by Swami Nityatmananda ji, a direct disciple of Sri M. It started functioning with effect from December 20, 1967 with the following prayer by Swami ji :

> Om Thakur, our beloved Father!
>
> This day we open this centre named Sri Ramakrishna Sri Ma Prakashan Trust (Sri Ma Trust) to propagate your holy name to all people of the world in our humble way for the peace and happiness of all. Yourself, accompanied by the Holy Mother and your beloved disciples like Swami Vivekananda and revered 'M.', do bless us; be always with us; do guide us in the right direction.
>
> *By this unselfish work, by this labour of love, may we realize your real nature, God incarnate on earth!*
>
> *May we have peace and happiness real; may all beings of the universe be peaceful and happy; may the entire universe be the abode of peace and happiness, real and eternal!*
>
> *I am your humble son and servant,*
>
> Swami Nityatmananda
> Civil Lines, Rohtak
> December 20, 1967

The motto of the Trust is— "God first, world next" (आगे ईश्वर, परे सब). Currently, the office of Sri Ma Trust is at 579, Sector 18-B, Chandigarh. Besides this, many of the

activities are run from "Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Peeth" ("Sri Peeth" for short) at Sector 19-D, Chandigarh..

At present, the Board of Trustees comprises of the following persons :

1. Dr. S.V Kesar : President
2. Sh. Nitin Nanda : Vice President
3. Sh. Sandeep Nangia : Secretary
4. Sh. Kamal Gupta, Dr. N.R. Bhardwaj and Dr. (Mrs.) Nirmal Mittal are trustees.

Puja, Satsang and Celebrations

Daily evening aarti and paath are conducted at the meditation hall at the premises of Sri Peeth, Sector 19, Chandigarh. Occasionally, satsangs are organized wherein we request the Secretary Mj. Ramakshna Mission, Chandigarh to deliver a spiritually inspiring lecture for us.

The Trust regularly celebrates the birth anniversaries of Sri Ramakrishna, Sri Sarada Devi, Swami Vivekananda, Sri M., Swami Nityatmananda and Mata ji Smt. Ishwar Devi Gupta. In addition to this Kalpataru Divas, National Youth Day, Kathamrita Divas, Raam Navmi, Shri Krishna Janmashtami etc. are also celebrated.

Usually, the Secretary or his designate from Ramakrishna Mission, Chandigarh attends these celebrations. But on account of Corona pandemic and consequential advisories from Chandigarh administration, some of these could not be carried out or carried out in a scaled down version.

Because of the restrictions in place, some of the activities were shifted online - so we had some satsangs carried out over Zoom video conferences. On Swami Nityatmananda's birthday a talk on zoom was arranged by Swami Atmajnanand ji, the then Secretary Swami ji of Ramkrishna Mission, Chandigarh on 20th June, 2021. We

were especially blessed to have organised a talk of Sri Dipak Gupta (the great grandson of M. and a source of inspiration for Sri Ma Trust) in Bangla on 31st July, 2021 wherein he spoke on M.

This time on 12.01.2022 National Youth Day was celebrated with Azadi ka Amrit Mahotsav. 12 students participated. They spoke on Swamij's idea on education, women education, nation building etc. Small children told stories on Swami Vivekananda, some spoke on thoughts of Swamiji. The program was started with prayer and chanting of Medha Suktam by a student Chetana. The program was liked by one and all. All the participants were distributed books on Swami ji along with other gifts and prasadam.

Publication Activities

The Trust continues to publish 60+ books besides the annual Nupur booklet. Some of our major publications are: English (Sri Sri Ramakrishna Kathamrita - 5 Volumes; M., the Apostle and the Evangelist in 16 volumes; A Short Life of M., Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita), Hindi (श्री म दर्शन in 16 volumes, श्री श्री रामकृष्ण कथामृत in 5 volumes), Bangla (Sri Ma Darshan - 16 volumes). Nupur 2021, our annual booklet, was also published this year as in earlier years. By Sri Thakur's grace, we have been able to publish Nupur uninterruptedly since 1994.

In FY 21-22, amongst the Hindi books, the next editions of Sri Ma Darshan, Vol 6 and 7; Sri Sri Ramakrishna Kathamrita, Vol 2 were published. Amongst the English books, the reprint of M, the Apostle and the Evangelist, Vol 10 was done.

Since we found that the distribution of English Kathamrita books was primarily in the hard bound form, we got the paper-bound versions of Sri Sri Ramakrishna Kathamrita, Vol 3 and 4 bound, so that the entire set can be distributed in the hard bound form.

Ebooks

In the modern world, more and more books are being read in electronic form instead of the paper form. Hence, it is imperative for Sri Ma Trust to also publish the books in electronic forms like Kindle, epub et al. Hence, a process of conversion of the physical books into suitable electronic forms has begun. In the FY21-22, following e-books have been made available on the following platforms :

- Kindle: M., the Apostle and the Evangelist - Volumes 1, 3, 4, 5, 9, 14, 15; Sri Sri Ramakrishna Kathamrita - Volum 1.
- Google Books: M., the Apostle and the Evangelist, Volumes 1, 3, 4, 5, 9, 14, 15; Sri Sri Ramakrishna Kathamrita - Volume 1 to 5.
- Kobo : M. the Apostle and the Evangelist - Volumes 1, 4, 5, 9, 14, 15.

These efforts have yielded encouraging results.

Book Dispatch

More than 3700 books were dispatched to individuals and also to organisations like Ramakrishna Mission, Ramakrishna Math and others. This includes 800 copies of Nupur 2021 which was distributed free of cost. Even for the other books, they are either heavily subsidised or sometimes given free in order to further the Trust's objective of furthering the spread of pious and meaningful living through the words of Thakur and his direct disciples.

A few "Sri Sri Ramakrishna Kathamrita (Bangla)" audio pendrives were also distributed. These are provided for free download from our website. Even so, sometimes we get requests from devotees who are not so technology savvy to provide these audio files to them in pendrive form. In order to assist the devotees, we accept such requests and ship them the pendrives with Kathamrita (Bangla) audio.

Daily Posts on Facebook, Instagram and WhatsApp

Members of the Trust regularly post inspirational messages from Kathamrita on Facebook and WhatsApp. The Facebook and Instagram posts can be viewed at https://www.facebook.com/kathamrit and https://www.instagram.com/kathamrit/ respectively.

YouTube Channel

A new YouTube Channel was created by Sri Ma Trust. Various lecture vidoes that are delivered in our satsangas (e.g. from Swami Atmajnananda, Sri Dipak Gupta) are posted onto this Channel.

Besides, numerous animated videos illustrating the teachings and parables of Sri Ramakrishna have been posted onto this channel.

Education Aid

Some scholarships each of the value of ₹2500/- per month continue to be provided to deserving and upcoming children.

Medical and Covid-19 Related Aid

The entire world has been beset with one of the biggest calamities in recorded history of humankind in the form of Covid-19. Following activities were carried out to ameliorate the situation from our side:

- A donation of ₹1,00,000 was given to PMCARES fund.
- The sevaks working with Sri Ma Trust were encouraged to get vaccinated as soon as possible. The Trust reimbursed their costs incurred from private vaccination centres if the workers were unable to find appointments at the government run vaccination centres.

Besides, the following medical aid was carried out by the Trust:

- A one time contribution of ₹1,00,000 was made to a cancer patient in view of the seriousness of her medical condition and the financial condition that her family was in.
- Sri Ma Trust used to run a allopathic/homepathic charitable clinics at the Sri Peeth premises previously also. This had got stopped due to many reasons. Attempts were made to restart the clinic again but because of the onset of multiple waves of Covid-19, this faced various delays. But finally, now, we have restarted a clinic where an allopathic doctor [Dr. Abhinandan, MBBS, MD, DNB (medicine)] has started attending patients for 2 hours a day, twice a week. In order to be able to do this, appropriate medical equipment and medicines for distribution were also bought. Attempts are also made to expand this activity.

Yoga Classes

Daily yoga sessions have been started at Sri Peeth premises where Acharya Rajendra Kaushik or one of his associates helps various visitors go through yogic exercises. Over a few months, this is now quite well attended.

Library

A library is operational at the premises of Sri Peeth wherein books primarily related to spiritual subjects are available for issuing. A librarian is available 6 days a week for 2 hours a day to issue these books to the subscribers of the library. The library is run free of cost and there is only a nominal security deposit.

Preservation of Old Editions into Electronic Versions

To preserve the old editions of our publications, we continue to scan them so as to be able to retrieve them later on need basis. So far, we have completed the scanning of Sri Ma Darshan (Hindi) set;, M., the Apostle and the Evangelist, Vol 1,2,3,6,7,8,11. Sri Ma Darshan (Bangla) was scanned earlier and is now in the process of being checked for errors. This is also used to speed up our typing process for the newer editions by using technologies like OCR (Optical Character Recognition). Besides, a few other old important books related to M. have been scanned for archival purposes.

Website

We maintaining a website: www.kathamrita.org where in we have provided many of our books in PDF format that devotees can download and read for free. Our yearly booklet NUPUR is also available on this website that devotees can download. For ease of purchase of books by devotees, online orders can also be placed on this site.

Sadhu Seva

₹10,000 were provided to Sadhvi Lata ji to help her run her Aashram— Maa Sarada Vidya Mandir during ongoing Covid-19 period.

Other Sevas

An amount of ₹51,000 was donated towards Ramakrishna Mission, Shimla in order to help them with the fencing of their property to enable protection from untoward elements.

The great grandon of Sri Mahendra Nath Gupta (M.), Sri Dipak Gupta left this mortal world on January 30, 2022. This is indeed a great loss for the spiritual world and especially for us as he has been a source of inspiration for

Sri Ma Trust. Sri Ma Trust contributed ₹50,000 towards Ramakrishna Math, Kathamrita Bhavan where the last days of Sri Dipak Gupta were spent. This organization also organized the *bhaṇḍārā* etc. after this holy soul's departure.

A donation of ₹51,000 was given to Ramakrishna Mission, Chandigarh. Ramakrishna Misson, Chandigarh continues to be a great support for our organization and this is but a humble contribution.

Sri Ma Trust also contributed ₹15,000 towards "Society for the care of the Blind", Chandigarh.

Advertising and Publicity

The advertisements of Sri Ma Trust publication often appear in Prabuddha Bharat, Vivek Jyoti, Vedanta Kesri, Udbodhan and on Google Adwords too.

Repair and Maintenance

Keeping a meditation hall functional requires appropriate regular maintenance. Of these repair and maintenance activities, two large maintenance activities stand out for this year viz. (a) Painting of boundary wall of Sri Peeth - this had remained pending after the rebuilding of a portion of wall last year due to Covid-19. (b) Cleaning and repair of sewerage to solve the long standing problem of sewerage blockage and rodents.

Compliance Activities

With the increased complexity of the laws, the tasks related to compliance activities required are on the rise. Major activities this year included (a) Filing for receiving 12A and 80G re-registraton in FY21-22 (b) Filing for some of the statutory returns were done in-house.

Sri M. Festivity

An endowment was setup at Ramakrishna Mission, Chandigarh in 1997 to arrange Sri Ma Mahotsav every year. However, in view of Covid-19, this could not be done this time. But the Trust did celebrate it with its regular bhaktas.

Sub-centre at Rohtak

A sub-centre of Sri Ma Trust is functional at the residence of Sri Naubat Ram Bhardwaj. The activities of this centre are— display of Vedic Channel in the morning, evening Arati and Paath and distribution of books published by Sri Ma Trust. The Foundation Day of Sri Ma Trust was celebrated on December 12, 2021 in which the founder's prayer was read out to the devotees present along with the regular arati, paath and prasad distribution.

Preservation of Important Artefacts

Sri Ma Trust is blessed to have in its possession some valuable artefacts e.g. we have some letters written by M. To preserve these letters, we have scanned these letters so that their contents can be preserved for posterity.

- Sandeep Nangia

अन्दर से श्री पीठ का मन्दिर

श्री 'म' ट्रस्ट के प्रकाशन

1. **श्री 'म' दर्शन**

   बंगला संस्करण— भाग 1 **से** 16**— स्वामी नित्यात्मानन्द**

श्री 'म' दर्शन महाकाव्य में ठाकुर, माँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द तथा अन्यान्य संन्यासी एवं गृही भक्तों के विषय में नूतन वार्त्ताएँ हैं। और इसमें है कथामृतकार श्री 'म' द्वारा 'कथामृत' के भाष्य के साथ-साथ उपनिषद्, गीता, चण्डी, पुराण, तन्त्र, बाइबल, कुरान आदि की अभिनव सरल व्याख्या।

2. **श्री 'म' दर्शन**

   हिन्दी संस्करण— भाग 1 **से** 16

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता द्वारा बंगला से यथावत् हिन्दी-अनुवाद।

3. **श्री 'म' दर्शन**

   अंग्रेजी संस्करण— ('M.'— **The Apostle and the Evangelist**)

श्री 'म' दर्शन ग्रन्थमाला का अंग्रेजी-अनुवाद प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता ने 'M.'— **The Apostle and the Evangelist** नाम से किया है। ट्रस्ट के पास सभी (1-16) भाग उपलब्ध हैं।

4. **Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial**

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता और पद्मश्री श्री डी०के० सेनगुप्ता द्वारा अंग्रेजी में सम्पादित बृहद् ग्रन्थ, जिसमें ठाकुर श्रीरामकृष्ण, 'कथामृत', श्री 'म' और 'श्री म दर्शन' पर श्रीरामकृष्ण मिशन के संन्यासियों समेत अनेक गणमान्य विद्वानों के शोधपूर्ण लेख हैं।

5. **A Short Life of Sri 'M.'**

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के मन्त्र-शिष्य और श्री 'म' ट्रस्ट के भूतपूर्व सचिव, प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा अंग्रेज़ी में लिखी गई श्री 'म' की संक्षिप्त जीवनी।

6. Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा लिखित श्री 'म' के जीवन तथा 'कथामृत' पर शोध प्रबन्ध।

7. श्री श्री रामकृष्ण कथामृत (हिन्दी संस्करण— भाग 1 से 5)

श्री महेन्द्रनाथ गुप्त (श्री म) ने ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के श्रीमुख-कथित चरितामृत को अवलम्बन करके ठाकुरबाड़ी (कथामृत भवन), कोलकता-700006 से 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' का (बंगला में) पाँच भागों में प्रणयन एवं प्रकाशन किया था। इनका बंगला से यथावत् हिन्दी अनुवाद करने में श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता ने भाषा-भाव-शैली— सभी को ऐसे सरल और सहज रूप में संजोया है कि अनुवाद होते हुए भी यह ग्रन्थमाला मूल बंगला का रसास्वादन कराती है।

8. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita (English Edition)

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के हिन्दी-अनुवाद से प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा कथामृत का अंग्रेजी-अनुवाद। सभी पाँचों भाग प्रकाशित।

9. नूपुर (वार्षिक स्मारिका)

श्री म ट्रस्ट के संस्थापक और हम सब के पूजनीय गुरु महाराज स्वामी नित्यात्मानन्द जी के 101वें जन्मदिन पर उनकी स्मृति में 'नूपुर' नाम से सन् 1994 ईसवी में इस स्मारिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। उसी स्मारिका ने अब वार्षिक पत्रिका का रूप ले लिया है, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, माँ सारदा, श्री म, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी नित्यात्मानन्द, 'श्री म दर्शन' आदि के बारे में प्रचुर सामग्री रहती है। साथ ही 'कथामृतकार श्री 'म' के द्वारा 'श्री 'म' दर्शन' में कही उन बातों को भी प्रकाश में लाया जाता है, जो 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' में नहीं हैं। नूपुर-2018 के प्रथम भाग में श्री 'म' ट्रस्ट का इतिहास वर्णित है अंग्रेज़ी भाषा में।

10. लाइयाँ ते तोड़ निभाइयाँ (स्मारिका)

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के 100वें जन्मदिवस पर सन् 2015 में यह स्मारिका प्रकाश में आई।

•

Sri Ramakrishna : …In the countryside (Kamarpukur), the women of carpenter families sell flattened rice. Let me tell you how alert they are when they attend to their work. The pestle of the husking-machine falls constantly into the mortar. With one hand, the woman pushes paddy into the mortar and with the other, suckles a baby in her lap. In the meantime, a customer arrives and she attends to the sale while the pestle goes on pounding the paddy in the mortar. ...Fifteen annas of her mind is tied to the falling pestle of the husking-machine lest it should pound her hand. With one anna of her mind she suckles the baby and attends to the buyer. Similarly, those who lead a family life, a householder's life, must give fifteen annas of the mind to God. Otherwise, they will face complete ruination and fall into the hands of Death. One must attend to worldly duties with one anna of the mind.

Sri Sri Ramkrishna Kathamrita 3-7-1,
27 December, 1883